

एक रहस्यमयी खेल
(सत्य घटनाओं पर आधारित
साइकोलॉजिकल क्राइम कहानी)
डॉ. निशा शास्त्री

एक रहस्यमयी खेल

(सत्य घटनाओं पर आधारित

साइकोलॉजिकल क्राइम कहानी)

राजमंगल प्रकाशन

An Imprint of **Rajmangal Publishers**

ISBN: **978-9348578327**

Published by:

Rajmangal Publishers

Rajmangal Prakashan Building,
1st Street, Ozone, Quarsi, Ramghat Road
Aligarh-202001, (UP) INDIA
Cont. No. +91- 7017993445
www.rajmangalpublishers.com
rajmangalpublishers@gmail.com
sampadak@rajmangalpublishers.in

प्रथम संस्करण: जनवरी 2025 – पेपरबैक

प्रकाशक: **राजमंगल प्रकाशन**

राजमंगल प्रकाशन बिल्डिंग, 1st स्ट्रीट,

ओजोन, क्वार्सी, रामघाट रोड,

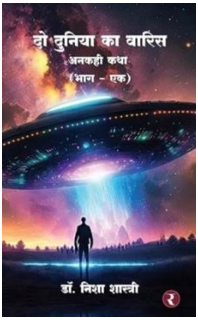
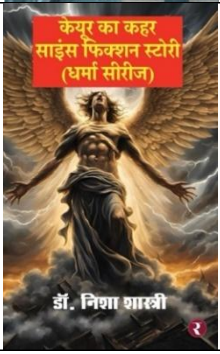
अलीगढ़, उप्र. – 202001, भारत

फ़ोन : +91 - 7017993445

First Published: Jan. 2025 - Paperback
Printed by : Repro India LTD & Manipal Tech LTD
eBook by: Rajmangal ePublishers (Digital Publishing Division)

अनुक्रमाणिका

डॉ निशा शास्त्री के अन्य नावेल

<table>
<tr><td>
</td><td>दो दुनिया का वारिस –
अनकही कथा (भाग एक)</td></tr>
<tr><td>
</td><td>दी इंटर्न - थ्रिलर मर्डर मिस्ट्री –
(सब कुछ किसी कारण से होता है)</td></tr>
<tr><td>
</td><td>केयूर का कहर
(साइंस फिक्शन स्टोरी)</td></tr>
</table>

लेखिका की कलम से

आप सभी ने मेरी थ्रिलर मिस्ट्री नावेल *दी इंटर्न* को जिस तरह से सराहा, उसके लिए मैं दिल से आभारी हूं। आपके प्यार और समर्थन ने मुझे गहराई से प्रेरित किया है।

मुझे यह बताते हुए अपार खुशी और गर्व हो रहा है कि *दिल्ली वायर* ने मुझे *2024 के टॉप 50 सबसे प्रभावशाली लेखकों*[1] में शामिल किया है। इसके अलावा, *फिल्मी चर्चा* मैगज़ीन ने मेरी इस नावेल-*दी इंटर्न*- को बॉलीवुड मूवी के लिए अनुशंसा की है।[2]

यह सब आपके समर्थन और प्रोत्साहन का ही परिणाम है। आपका साथ मेरे लिए बहुत मायने रखता है।

इसी कड़ी में, मैं आप सभी के लिए एक नई साइकोलॉजिकल थ्रिलर मिस्ट्री - **एक रहस्यमयी खेल,** लेकर आ रही हूँ, जो सत्य घटनाओं से प्रेरित है। यह रोमांचक कहानी हर पल आपको चौंकाएगी और इसका सस्पेंस आपके दिमाग को झकझोर कर रख देगा। आशा है कि यह उपन्यास आपको रोमांच और रहस्य की एक अनोखी दुनिया में ले जाएगा।

यदि इस नावेल या मेरे अन्य उपन्यासों के बारे में आपके कोई सुझाव या विचार हों, तो आप मुझसे इंस्टाग्राम या स्नैपचैट पर जुड़ सकते हैं। आपके फीडबैक का मुझे हमेशा इंतजार रहता है। नीचे मेरे इंस्टाग्राम और स्नैपचैट अकाउंट की जानकारी दी गई है।

[1] https://www.delhiwire.com/top-50-most-influential-authors-of-2024/10878/

[2] https://filmycharcha.com/bollywood/bollywood-are-you-listening-these-indian-books-need-to-be-movies

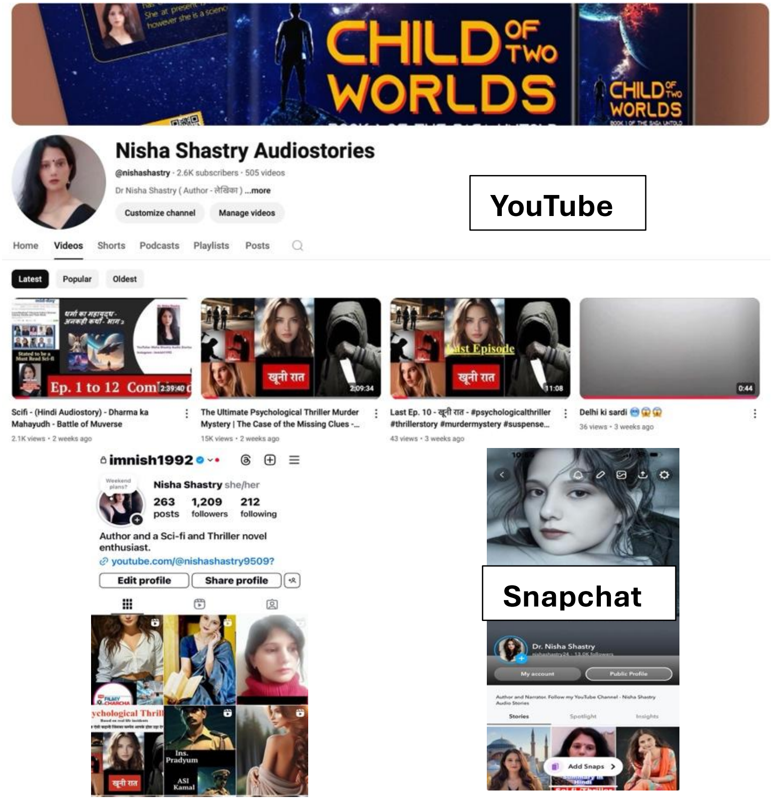
आपका समर्थन और सुझाव मेरे लेखन के लिए बहुत मूल्यवान हैं। 😊 📖

इस कहानी की ऑडिओस्टोरी आप मेरे यूट्यूब चैनल निशा शास्त्री पर भी सुन सकते है।

आशा करती हूँ आपको मेरा यह प्रयास भी बाकि प्रयास की तरह बहुत ही ज्यादा पसंद आएगा।

थैंक्स।

निशा



एपिसोड एक - खूनी रात

रात का घनघोर अँधेरा था। तकरीबन रात के एक बज गए थे और रमेश बहुत ही ज्यादा लेट हो गया था। सामान्यतः वो आठ बजे तक अपने ऑफिस से निकल जाता था परन्तु आज उसका काम ख़तम ही नहीं हुआ था। वो अपनी मारुती सुज़ुकी गाड़ी में बैठा ही था कि उसकी पत्नी का फोन आ गया।

"कहाँ हो तुम। टाइम देखा है।"

"हाँ जान बस निकल रहा हूँ।"“

"जल्दी आ जाओ मुझे कुछ अच्छा नहीं लग रहा। बुरे बुरे ख्याल आ रहे है।" रमेश की पत्नी बहुत घबराह्ते हुए बोली।

"बस गाड़ी में बैठ गया हूँ पच्चीस मिनिट में घर आ जाऊंगा। और क्या हो गया इतना क्यों डर रही हो। बारिश ही तो हो रही है।" रमेश ने गाड़ी स्टार्ट करते हुए अपने फोन को स्पीकर पर डालते हुए कहा।

"नहीं जी। नए झालाना एरिया में कोई खून हो गया है और कातिल गायब है। एक हस्बैंड वाइफ का खून कर दिया गया है। तुम्हारे रस्ते में ही आता है वो एरिया।" रमेश की पत्नी एक ही सांस में बोल गयी।

"अरे इतना क्यों घबरा रही हो। मैं गाड़ी में हूँ। बिना रुके आ जाऊंगा।" रमेश थोड़ा हस्ते हुए बोला। वो अपनी गाड़ी को ऑफिस के पार्किंग से निकाल चूका था। वो जल्दी ही सुनसान रस्ते पर अपनी गाड़ी भगा रहा था।

"हाँ। बस बेचैनी हो रही थी।"

"तुम भी ना यार। टेंशन मत लो। मैं ऑफिस से निकाल चूका हूँ बस बीस मिनिट में तुम्हारे पास होऊंगा। बंटी सो गया।" रमेश ने उस

घनघोर अँधेरी रात में फोकस करते हुए अपनी पत्नी को स्पीकर फोन पर कहा। बारिश के कारन रास्ता मुश्किल से दिख रहा था और रमेश धीरे धीरे ही अपनी गाड़ी चला रहा था।

"हाँ। वो सो गया। जल्दी आ जाओ"

"तुम फोन रखो तो में ढंग से गाड़ी चलाऊं। और नए झालाना एरिया में खून हुआ है हमारे घर में नहीं।" रमेश हस्ते हुए बोला।

"शुभ शुभ बोलो। जल्दी आ जाओ।" रमेश की पत्नी ने कहा।

रमेश ने कहा "लव यू" और फोन काट दिया।

रात बहुत ही गहरी थी। शायद अमावस्या की रात थी। रमेश पूरी तरह से रस्ते पर ध्यान दे रहा था। वो जल्द ही नए झालाना एरिया के नज़दीक पहुँच गया। वहां एक गहरी ख़ामोशी थी। रमेश के सामने तभी एक बहुत ही उबड़ खाबड़ रोड आ गयी।

"यार इंडिया में कुछ भी काम ठीक नहीं होता। थोड़ी सी बारिश होती है और रोड ख़राब जो जाती है। पूरा सिस्टम ही ख़राब है।" रमेश मन ही मन सरकार और तंत्र को कोसता हुआ अपनी कार को बिलकुल ही धीरे धीरे चला रहा था। शायद गाड़ी की स्पीड कुछ दस या पंद्रह किलोमीटर प्रति घंटा तक धीरे हो गयी थी।

तभी रमेश के ड्राइविंग सीट के कांच पर किसी ने जोर से थप थप किया। रमेश ने देखा एक खून सने पंजे के निशान उसकी विंडो पर हो गए थे। उसने साइड व्यू मिरर से देखा, एक अति सुन्दर कन्या, पूरी दूधिया, शायद बीस वर्ष से एक दिन भी ज्यादा नहीं होगी उसे बहुत ही हसरत से देख रही थी। उसने सफेद सलवार-कमीज़ पहन रखी थी, मगर उसकी कमीज़ जगह-जगह से फट चुकी थी। वह अपने कांपते हाथों से कमीज के एक फटे कपड़े का टुकड़ा थामे, जैसे-तैसे अपने स्तनों को ढकने की

कोशिश कर रही थी। उसकी सलवार पर खून के धब्बे साफ नजर आ रहे थे, और उसके हाथ भी खून से सने हुए थे।

रमेश को एक पल के लिए लगा वो वहां से भाग जाए, परन्तु फिर उसने नज़र भर उस लड़की को देखा। वो अति सुन्दर दूधिया रंग सी सफ़ेद लड़की बदहवास लग रही थी। उसकी फटी कमीज़ ये इशारा कर रही थी कि किसी ने उस पर बुरी नज़र डाली थी। शायद वो अपनी इज्जत और जान बचाने के लिए उससे मदद की उम्मीद कर रही थी। ऐसे लड़की को इस घनघोर अँधेरे में छोड़ कर जाना रमेश को उचित नहीं लगा। उसने ब्रेक लगा दिए।

वो लड़की जो रमेश की कार को ही देख रही थी , कार के रुकते ही भाग कर कार तक पहुंच गयी।

रमेश ने ड्राइवर सीट का शीशा नीचे किया "कौन हो तुम" रमेश ने कहा।

"सर मुझे प्लीज अपनी गाड़ी में बैठा कर आगे तक कहीं छोड़ दीजिये। प्लीज जल्दी कीजिये। अभी यहाँ मेरे माता पिता का खून हो गया है और मैं बड़ी मुश्किल से भागी हूँ। प्लीज सर।" उस लड़की ने बेहद मृदु आवाज़ में, एक ही सांस में कहा। ऐसा लग रहा था वो बहुत ही सभ्य परिवार से है। रमेश ने उसे नज़र भर फिर देखा और वो किसी अप्सरा से कम नहीं लग रही थी। वह लड़की ऐसी लग रही थी मानो स्वर्ग से उतरी हो। उसकी त्वचा दूध जैसी उज्ज्वल और कोमल थी, मानो चांदनी की रोशनी ने उसे छू लिया हो। उसकी बड़ी-बड़ी आँखें जैसे किसी झील की गहराई लिए हुए थीं, और उनमें चमकती मासूमियत किसी को भी मोहित कर सकती थी। उसके लंबे, रेशमी बाल हवा के साथ लहराते हुए किसी बहते झरने की याद दिला रहे थे। उसकी मुस्कान इतनी मनमोहक थी कि देखते ही दिल में एक अजीब-सी खुशी भर जाए। वह सचमुच अप्सरा से

भी सुंदर लग रही थी, जैसे प्रकृति ने उसे अपनी पूरी सुंदरता के साथ गढ़ा हो।

ऐसी लड़की अगर किसी को मिल जाए, तो वह उसका फायदा उठाने की कोशिश जरूर करेगा। उसने बड़ी मुश्किल से अपने स्तनों को एक बेहद छोटे और फटे हुए कपड़े से ढका हुआ था, जबकि ऊपर से वह लगभग नग्न थी। उसकी सलवार पर खून के धब्बे इस तरह फैले हुए थे, जैसे उसने किसी को मारने के बाद अपने हाथ वहीं पोंछे हों। क्या यह लड़की सचमुच उन हत्यारों को मारकर भागी थी?

रमेश अभी ये सब सोच ही रहा था कि उस लड़की की आवाज़ ने उसका ध्यान भांग किया।

"सर, प्लीज जल्दी कीजिए। वो क्रूर गुंडे कभी भी आ सकते हैं," लड़की ने घबराई हुई आवाज़ में कहा।

"ठीक है, तुम पीछे बैठ जाओ," रमेश ने जवाब दिया और अपनी मारुति सुज़ुकी स्विफ्ट के पीछे के दरवाजे का लॉक खोल दिया।

लड़की ने तुरंत गेट खोला और तेज़ी से गाड़ी में बैठ गई। लेकिन इस हड़बड़ी में वह कपड़ा, जिससे उसने अपने स्तनों को ढका हुआ था, नीचे गिर गया, और वह ऊपर से पूरी तरह नग्न हो गई।

रमेश ने गाड़ी आगे बढ़ा दी। वह लड़की खुद को सिकोड़कर सीट पर सहमी-सहमी बैठ गई।

रमेश पूरी कोशिश कर रहा था कि रियरव्यू मिरर में केवल लड़की की आँखों से नजरें मिलाए, लेकिन बार-बार उसकी निगाह अनचाहे ही उस लड़की के स्तनों की ओर चली जाती, जिन्हें वह अपने हाथों को कसकर बांधते हुए छुपाने की कोशिश कर रही थी।

"तुम्हारी ये हालत कैसे हो गयी।" रमेश ने बोला। उसे अगले बीस मिनिट तक उस लड़की से बात करनी थी। फिर अपने घर से उसे कुछ

कपडे पहना कर उसे पुलिस स्टेशन ले जाना था। वो ये सब मन ही मन सोच रहा था।

"सर सबसे पहले तो थैंक यू सो मच। आप नहीं जानते अपने मेरी कितनी मदद कर दी है।" वो लड़की बहुत ही सौम्य और शालीन भाव से बोली।

रमेश अब एक नज़र सड़क पर डाल रहा था और एक नज़र रियरव्यू मिरर पर और उस लड़की से बात कर रहा था जो पीछे की सीट पर बांहे सिकोड़ कर बैठी थी।

"आज रात तीन गुंडे मेरे घर में घुस आए। उन्होंने मेरे माता-पिता को बहुत ही बुरी तरह मार डाला," यह कहते ही वह लड़की फूट-फूटकर रोने लगी।

"अरे, तुम रो मत," रमेश अचानक ही बोल पड़ा और गाड़ी को सड़क के किनारे रोक दिया। वह पीछे मुड़कर लड़की से बात करने लगा।

"प्लीज, आप गाड़ी मत रोकिए। वे गुंडे शायद हमारे पीछे आ रहे हों," लड़की ने सिसकते हुए कहा।

रमेश ने उसकी बात सुनते ही गाड़ी फिर से आगे बढ़ा दी। उसने एक बार फिर रियरव्यू मिरर में देखा। लड़की ने खुद को थोड़ा संभालते हुए कहना शुरु किया, "उन तीनों गुंडों ने मेरे माता-पिता को मारने के बाद मेरे कपड़े फाड़ दिए।"

वह एक पल के लिए चुप हो गई। फिर हिम्मत जुटाते हुए बोली, "उनमें से एक ने कहा, अब हम तुझे रात भर मजे देंगे।"

रमेश रियरव्यू मिरर में उस लड़की को देखता ही जा रहा था। उसकी खूबसूरती ने उसे बांध लिया था। उसने आज तक इतनी सुंदर लड़की कभी नहीं देखी थी। वह उन गुंडों की मानसिकता भली-भांति समझ सकता था—इतनी सुंदर लड़की को भला क्यों ही छोड़ते? लेकिन जैसे ही यह

विचार उसके मन में उभरा, एक अजीब सी शर्म और अपराधबोध ने उसे भीतर तक झकझोर दिया। वह कुछ भी कहने से खुद को रोक रहा था, क्योंकि वह जानता था कि यह वक्त उस लड़की के दर्द को समझने का था, न कि अपने विचारों में उलझने का।

वह लड़की, जो अपने सदमे में थी, शायद रमेश की मनोदशा भांप गई थी। उसने कुछ देर चुप रहने के बाद अपनी सिसकियों को रोकते हुए कहा, "फिर उन्हीं में से एक बोला, यार, इन दो लाशों के बीच मजा नहीं आएगा। और ये इतना छोटा मकान है कि यहाँ और कोई जगह भी नहीं। इसे अपने अड्डे पर ले चलते हैं।"

उसकी आवाज में एक दर्द भरी कड़वाहट थी, जिसने रमेश को और भी गहरे सोच में डाल दिया। उसने खुद को संयत रखने की कोशिश की, लेकिन हर शब्द के साथ उसकी ग्लानि और गहरी होती जा रही थी।

रमेश अब अधिकांश समय रियरव्यू मिरर में ही देख रहा था। उसकी गति धीमी हो गई थी, हालांकि सड़क अब खराब नहीं थी। उस लड़की की अद्वितीय सुंदरता, और उसका ऊपर से नग्न होना, रमेश को गहराई तक प्रभावित कर रहा था। वह अब अपने घर जाने की कोई जल्दी महसूस नहीं कर रहा था, मानो समय और जिम्मेदारियां सब थम गई हों।

शायद लड़की ने उसकी नीयत को भांप लिया था। महिलाएं इन चीजों को जल्दी समझ लेती हैं। लेकिन उसने कुछ भी नहीं कहा। इस बार उसने रमेश को गाड़ी तेज चलाने के लिए भी नहीं कहा, मानो उसने स्थिति को स्वीकार कर लिया हो।

थोड़ी देर बाद उसने फिर से बोलना शुरू किया, "फिर वे तीनों गुंडे मुझे उठाकर बाहर वही ले आए, जहां मुझे आपने पाया था। शायद उनकी गाड़ी पास ही कहीं पार्क थी। लेकिन अंधेरे के कारण वे उसकी सही जगह

भूल गए थे। दो गुंडे गाड़ी ढूंढने चले गए, और तीसरे ने मुझे कसकर पकड़ रखा था।"

रमेश लड़की की बातों को ध्यान से सुन रहा था और हर दृश्य को अपने दिमाग में कल्पना कर रहा था। उसकी गाड़ी इतनी धीरे चल रही थी कि अगर गुंडे सचमुच उसके पीछे आ रहे होते, तो अब तक उसे पकड़ चुके होते।

लेकिन गुंडों का पीछा करना शायद सिर्फ एक संभावना थी। या फिर यह पूरी स्थिति कुछ और गहरी चाल का हिस्सा थी, जिसका अंदेशा रमेश को अभी नहीं था।

"उन दोनों गुंडों को गाड़ी ढूंढने में थोड़ा समय लग गया। इस बीच, तीसरा गुंडा, जो मुझे पकड़कर उस सड़क पर खड़ा था, मुझे घूरते हुए बोला, "जब तक वे दोनों नहीं आते, मैं ही तेरे मज़े ले लेता हूं।"

उसने यह कहते ही मुझे जमीन पर धक्का दे दिया। मेरे बचे-खुचे कपड़े, जो किसी तरह अब तक मेरे शरीर पर थे, उसने बेरहमी से फाड़ दिए। फिर वह मेरे ऊपर लेट गया और मुझे जबरन हर जगह किस करने लगा।"

लड़की की आवाज में घबराहट और दर्द साफ झलक रहा था। उसकी बात सुनकर रमेश का दिल भीतर तक दहल गया। उसने अपने दिमाग को शांत रखने की कोशिश की, लेकिन वह खुद को उन भयावह घटनाओं के बारे में सोचने से रोक नहीं पा रहा था। उसकी गाड़ी अब और धीमी हो गई, मानो हर शब्द रमेश के भीतर एक अजीब-सी बेचैनी पैदा कर रहा हो।

रमेश उन सारे दृश्य को अपनी कल्पना में सजीव रूप से देख रहा था, और शायद यही कुछ वह लड़की चाहती थी। वह उतनी कमसिन और मासूम नहीं लग रही थी, या फिर कुछ और ही षड़यंत्र था। रमेश अब पूरी

तरह उस लड़की की कहानी में खो चुका था। उसकी गाड़ी इतनी धीमी चल रही थी, जैसे वह किसी साइकिल की गति से भी कम हो। अगर वे गुंडे सच में आ गए, तो ना तो वह लड़की को छोड़ेंगे और न ही रमेश को। फिर भी, ऐसा लगता था कि रमेश और वह लड़की दोनों ही इस खतरे को पूरी तरह भूल चुके थे।

"मेरे हाथ में किसी तरह एक नुकीला पत्थर आ गया। मैंने उसे पूरी ताकत से उस गुंडे की आँख में दे मारा। वह गुंडा दर्द से कराह उठा। इससे पहले कि वह संभल पाता, मैंने उसी पत्थर से उसकी दूसरी आँख भी फोड़ दी। उसकी आँख से खून बहने लगा, और वह ज़ोर-ज़ोर से रोने लगा। मैंने उस पत्थर से उसके सिर पर चार-पाँच वार किए। वह ज़मीन पर गिरकर कराहने लगा। फिर, मैंने मौके का फायदा उठाया, उठकर वहां से भाग निकली। कुछ देर बाद, मैंने आपको देखा। आपकी गाड़ी की स्पीड धीमी थी, इसलिए मैंने आपको मदद के लिए पुकारने की अपनी हिम्मत जुटाई।"

रमेश की गाड़ी तकरीबन रुक सी ही गयी थी। उस लड़की ने फिर रमेश को देखा जो अब गाड़ी रोक कर उसे पीछे मुड़ कर देख रहा था।

"तुम टेंशन मत लो।" रमेश ने पहली बार उस लड़की को स्पर्श किया। उसने उसके कंधे पर हल्के से थपथपाया। उस लड़की का शरीर बेहद कोमल था, मोम की तरह नरम। इतनी सुंदर लड़की रमेश से मात्र कुछ फुट की दूरी पर थी। उस घनी अंधेरी रात में, उस गाड़ी में, रमेश को एक क्षण के लिए लगा कि वह उस लड़की के साथ वह सब कर सकता है जो वो गुंडा नहीं कर पाया था। उस गाड़ी में तो कोई पत्थर भी नहीं था जो उनके बीच आता।

रमेश पर उसकी वासना हावी होने लगी थी। उस लड़की ने रमेश की आँखों में वासना की चमक देखी। उसे एक पल के लिए संदेह हुआ कि कहीं उसने इस गाड़ी वाले से मदद माँगकर कोई गलती तो नहीं कर दी।

उसने रमेश की नीयत को भांप लिया था। इससे पहले कि रमेश अपनी वासना के हवाले कोई कदम उठा पाता, उसकी बीबी का फोन बजा।

"कहां हो आप? पच्चीस मिनट हो गए आपको ऑफिस से निकले हुए," उसकी बीबी ने बिना रमेश की बात सुने कहा।

"बस आ रहा हूँ।"

"जल्दी आओ। मुझे बहुत ही ज्यादा डर लग रहा है," रमेश की बीबी बोली।

"ठीक है।"

"और फोन मत काटना। फोन ऑन रहने दो," रमेश की बीबी ने आदेशात्मक स्वर में कहा।

रमेश कुछ नहीं बोला। उसने उस लड़की के कंधे पर हल्के से थपथपाया और गाड़ी चला दी। वह कुछ ही मिनटों में अपने घर पहुँचने वाला था। वह लड़की भी शायद इस भयावह रात से घबरा गई थी। उसे पता ही नहीं चला कि वह कब नींद के आगोश में चली गई, और पीछे की सीट पर लेट गई। रमेश ने एक नज़र रियरव्यू मिरर से उसे देखा। उसके हाथ अब उसके स्तन से हट चुके थे। उसके ऊपरी नग्न शरीर को देखकर रमेश वासना से पूर्णतः लिप्त हो गया। उसने इतनी सुंदर लड़की कभी नहीं देखी थी।

उसके गौरवर्णी स्तन और कोमल बदन ऐसा कुछ था जो उसने कभी नहीं देखा था। यह अप्सरा से भी सुंदर बदन रखने वाली स्त्री उसकी कार की बैक सीट पर लेटी हुई थी। रमेश उसे बस घूरे जा रहा था। वह सब कुछ भूलकर केवल उस जिस्म को एक बार पाना चाहता था। ऐसी रात शायद उसके जीवन में फिर कभी नहीं आएगी। ऐसा मौका उसे दोबारा कभी नहीं मिलेगा।

तभी उसकी पत्नी स्पीकर फोन पर बोल उठी, "कहां पहुंचे?"

उसकी पत्नी की उस आवाज़ से वो लड़की भी उठ गयी। उसने रमेश को देख लिया जो उसके शरीर को घूर रहा था। उसने अपने हाथो को सिकोड़ लिया और रमेश ने भी अपनी नज़र हटा ली।

"बस आ गया, गेट के बाहर हूँ," रमेश ने कहकर फोन काट दिया।

उसने फिर उस लड़की को देखकर कहा, "तुम मेरे घर में थोड़ी देर आराम कर लो। कल सुबह हम पुलिस स्टेशन जाएंगे। तुम चिंता मत करो, मैं अकेला नहीं रहता, मेरी बीबी और बेटा साथ में हैं।" रमेश एक सांस में बोला।

उस लड़की ने कुछ नहीं कहा और सिर्फ हामी भरते हुए सहमति में सिर हिला दिया।

रमेश ने अपनी गाड़ी घर के बाहर खड़ी कर दी। उसका घर एक छोटा सा एक-बेडरूम हॉल-किचन, यानी 1 BHK का मकान था। उसने उस लड़की को गाड़ी से बाहर आने का इशारा किया और उसे साथ लेकर घर में घुसा। उसकी बीबी ने गाड़ी की आवाज सुन ली थी और खुद बाहर आ गई थी।

"ये कौन है?" उसकी बीबी ने चिंतित स्वर में पूछा।

रमेश के साथ एक बेहद सुंदर लड़की थी, जो अपने ऊपरी भाग पर उचित वस्त्रों के बिना थी। उसकी बीबी को जो डर लग रहा था, वह शायद सच हो रहा था। रमेश ने कैसे इस लड़की को अपने साथ घर ले आया था?

* ϕ *

"हमने पूरे घर की तलाशी ले ली है। परंतु कुछ भी चोरी नहीं हुआ है," ASI कमल ने कहा।

"ठीक है। फिर इन दोनों की इतनी क्रूर हत्या कैसे हो गई?" इंस्पेक्टर प्रद्युम्न ने दो लाशों को देखते हुए पूछा।

एक दंपत्ति की लाशें वहां पड़ी थीं। पुरुष शायद पचास वर्ष का रहा होगा और उसकी पत्नी लगभग पैंतालीस की। दोनों की ही किसी धारदार हथियार, शायद चाकू से हत्या की गई थी।

"सर, आपने एक बात नोटिस की?" कमल ने पूछा।

"हां। महिला और पुरुष की हत्या में अंतर है।" इंस्पेक्टर प्रद्युम्न ने कहा।

"बिल्कुल सही, सर। महिला को एक तरह से सम्मानजनक मौत दी गई। उसका गला काटा गया है और वह तुरंत मर गई, लेकिन पुरुष..." कमल ने अपनी बात पूरी करने से पहले प्रद्युम्न बोल उठे, "...उसके लिंग को काटा गया, उसकी आंख फोड़ी गई, और उसके मल स्थान में चाकू घुसाकर घुमाया गया है।"

"इससे साबित होता है कि जिसने भी इस पुरुष की हत्या की, उसने उसके तड़पने से एक प्रकार का एन्जॉयमेंट हासिल किया।"

"हां, कमल। न सिर्फ यह, बल्कि पुरुष नग्न अवस्था में मिला है और स्त्री नहीं। इसका मतलब यह है कि अपराधी पहले स्त्री को मार डाला और फिर उस आदमी के साथ इतना निर्मम व्यवहार किया।"

"हां, सर," कमल ने सहमति में कहा।

प्रद्युम्न नीचे झुका और उस पुरुष की लाश की आँखें खोलते हुए बोला, "कमल, देखो, इसकी आँखों से ऐसा लग रहा है कि इसे किसी बड़ी मात्रा में ड्रग दिया गया है।"

कमल ने भी नीचे झुककर पुरुष और स्त्री दोनों की आँखों को देखा। "सर, लगता है इस स्त्री को भी कुछ ड्रग दी गई है।"

प्रद्युम्न ने स्त्री की आँखें भी देखीं। "ठीक है, इन लाशों को पोस्टमार्टम के लिए भेज दो।"

"परंतु सर, इस हत्या का मोटिव क्या हो सकता है?"

"कुछ समझ नहीं आ रहा, कमल। यह नई झालाना एरिया है, यहाँ के लोग इतने अमीर भी नहीं हैं। सभी का बमुश्किल 1 BHK मकान है। इस मकान से कोई चोरी भी नहीं हुई है। या तो यह किसी आपसी रंजिश का मामला लग रहा है। कोई इस पुरुष से इतना खफा था कि उसे नग्न करके उसके लिंग को काटा, आँखें फोड़ीं, और मल स्थान पर चाकू डालकर ऐसी बुरी तरह घुमाया कि एनल की सेंसिटिव नसें बुरी तरह कट गई हैं।"

“सर ऐसा खून या तो कोई बहुत बड़ा जानी दुश्मन कर सकता है या…”

“या कोई साइकोलॉजिकल किलर” प्रद्युम्न ने बात पूरी की।

वे दोनों सोच में पड़ गए थे कि क्या उनके शहर में ऐसा कोई सीरियल किलर आ गया है जो पुरुषों को इतनी वीभत्स मौत दे रहा है। हालांकि, यह पहली घटना थी, लेकिन प्रद्युम्न और कमल को अब इसके लिए तैयार होना था। क्योंकि जल्द ही एक और बहुत ही भयानक अपराध होने वाला था, जो शायद इन दो हत्याओं से भी ज्यादा घृणित होगा।

वहां मीडिया का जमघट लगा हुआ था। सब इस हत्या को अपने-अपने अंदाज में कवर कर रहे थे। प्रद्युम्न और कमल ने मीडिया को एक जगह इकट्ठा किया। "हम आप सभी से रिक्वेस्ट करते हैं कि कृपया भ्रामक डर न फैलाएं।"

एक पत्रकार ने कहा, "सर, अगर पुलिस कोई ऑफिशियल स्टेटमेंट नहीं देगी तो हम क्या करें? ये हत्याएं तो लगभग दो घंटे पहले हुई हैं।"

"तो क्या हम दो घंटे में केस सॉल्व कर दें?" प्रद्युम्न गुस्से से बोला।

"आप दो साल में भी केस सॉल्व नहीं कर पाएंगे, लेकिन ऑफिशियल स्टेटमेंट तो दीजिए," एक दूसरे पत्रकार ने कहा।

प्रद्युम्न और कमल दोनों को बहुत गुस्सा आया।

"आप लोग हमसे क्या चाहते हैं? यहां दो हत्याएं हो गई हैं और हम अभी जांच कर रहे हैं," प्रद्युम्न ने गुस्से से कहा।

"सर, ये दोनों लोग कौन हैं? हत्या का हथियार क्या है? मोडस ऑपरेंडी क्या है? क्या लूट के इरादे से हत्या हुई है या कुछ और? जितना हम देख पाए, पुरुष की लाश नग्न है और स्त्री की सामान्य, ऐसा क्यों? इन सब का ऑफिशियल स्टेटमेंट दीजिए।"

"सुनिए, आप लोग इस प्रकार से पुलिस के कार्य में बाधा न डालें," प्रद्युम्न ने कहा। उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि वे इन पत्रकारों को क्या बताएं।

"सर, ऑफिशियल स्टेटमेंट दीजिए," एक पत्रकार ने गुस्से में कहा।

प्रद्युम्न और कमल दोनों ही वापस अंदर चले गए। बाकी पुलिस वाले बैरिकेडिंग के जरिए मीडिया को मकान से दूर रखने में लग गए।

मीडिया वाले हताश हो गए और जिसकी जो मर्जी आई, उसने वैसी ही खबर दिखाना शुरू कर दिया। उनमें से एक न्यूज़ थी कि शायद एक पागल हत्यारा खुला घूम रहा था जो किसी को भी एक तड़पती हुई मौत दे सकता था। यही खबर रमेश की पत्नी ने सुनी और रमेश को फोन किया। यह खबर रात के बारह बजे दिखाई जा रही थी, और रमेश की पत्नी ने अपने पति को रात के एक बजे फोन किया था।

प्रद्युम्न और कमल न केवल इस हत्या से दुखी थे, बल्कि उन मीडिया वालों से भी, जो इस खबर को सनसनीखेज बनाकर पेश कर रहे थे।

* ф *

"अंदर चलो, बताता हूँ," रमेश ने कहा। उसने अपनी पत्नी और उस लड़की को अंदर आने का इशारा किया। वे सभी अब घर के अंदर थे।

"इसे अपना कोई गाउन दे दो," रमेश ने अपनी पत्नी से कहा, और उसकी पत्नी ने हिचकिचाते हुए एक गाउन लाकर उस लड़की को दिया।

"अंदर हमारे बेडरूम के साथ ही बाथरूम है, तुम चेंज कर लो। हाथ-पैर भी धो लो। मैं तुम्हारे लिए कुछ खाने-पीने का देखता हूँ," रमेश ने बहुत ही सलीके से कहा।

"ओके, थैंक यू," वह लड़की बोली और रमेश की पत्नी के हाथ से गाउन लेकर बेडरूम में चली गई। रमेश का मकान एक छोटा सा 1 BHK मकान था। वे लोग अभी हॉल में थे और वह लड़की उनके बेडरूम में चली गई, जहाँ उनका बेटा बंटी सो रहा था।

"कौन है ये?" रमेश की बीबी ने बहुत ही कड़क आवाज में पूछा।

"अरे, मेरी बीबी, ये मुझे नई झालाना एरिया में मिली।"

"क्या? वहीं तो क़त्ल हुआ है।"

"हाँ। इसी के माता-पिता को तीन गुंडों ने मार डाला। इस पर रेप का प्रयास किया, लेकिन ये उस गुंडे को मारकर किसी तरह बचकर भागी और मेरी गाड़ी के पास आ गई।"

"और तुम इस मुसीबत को घर लेकर आ गए। मैंने कहा था चुपचाप घर आ जाना।"

"तो क्या इस लड़की को वहां उन गुंडों के पास मरने के लिए छोड़ देता?"

"तो इसका हम क्या करेंगे? हमारे पास कोई पैसे का पेड़ तो है नहीं," रमेश की बीबी जोर-जोर से चिल्लाते हुए बोल रही थी।

"तुम थोड़ा शांत हो जाओ। इसे कल सुबह पुलिस स्टेशन ले जाऊंगा," रमेश ने अपनी बीबी को सांत्वना देते हुए कहा।

गुस्से में पैर पटकते हुए वो अपने कमरे में चली गई और पलंग पर लेटकर सोने की कोशिश करने लगी।

इस बीच, वह लड़की, गाउन पहनकर हाथ-मुंह धोने के बाद, बाहर रमेश के पास लिविंग एरिया में आ गई।

"मुझे कुछ खाना-पीना नहीं है। मैं यहीं सो जाती हूँ," उसने सोफे की ओर इशारा किया।

"ठीक है, रात काफी हो गई है। तुम आराम करो। कल बात करते हैं," रमेश बोला और अपने कमरे में चला गया। उसने कमरे का दरवाजा बंद कर लिया।

वह लड़की सोफे पर सो गई। लेकिन तभी रमेश ने फिर दरवाजा खोला और पूछा, "तुम्हारा नाम क्या है?"

“श्वेता “

"क्या बात है। तुम्हें सूट करता है। तुम श्वेत से भी ज्यादा श्वेत हो," रमेश ने कहा।

श्वेता थोड़ा शर्मा गई। "गुड नाईट," वो मोहक अंदाज में बोली और सोफे पर लेट गई।

रमेश ने उसे देखा और कहा, "गुड नाईट।"

वो फिर अपनी पत्नी के पास आकर लेट गया। उसकी आँखों में नींद नहीं थी। उसने अपनी पत्नी को देखा। वो सांवली और मोटी थी। उसकी जैसी सामान्य नयन-नक्श वाली स्त्रियाँ शायद हर गली में दिख जातीं, लेकिन श्वेता जैसी लड़की लाखों में एक होती है।

धीरे-धीरे रात बीतती जा रही थी, लेकिन रमेश को नींद नहीं आ रही थी। श्वेता की वह छवि जब वह कार में लेटी हुई थी और उसका हाथ

हट गया था, जिससे उसका नग्न शरीर का ऊपरी हिस्सा दिख रहा था, बार-बार उसे याद आ रहा था।

उस गौरवर्णी शरीर, उस सुंदर चेहरे, उस वक्षस्थल का जो किसी बड़े ऋषि की तपस्या भी भंग कर सकता था, के विचार ने रमेश को उत्तेजना से भर दिया था। उस नग्न शरीर की कोमलता के ख्यालों में उलझा हुआ, रमेश बार-बार उसी में खोया रहा। वह श्वेता के उस अति आकर्षक शरीर को भूल ही नहीं पा रहा था। वह अति सुंदर स्त्री उनके ड्राइंग रूम में सो रही थी। काश, रमेश उसके साथ हो सकता। वह श्वेता को एक बार पाना चाहता था।

रात के तीन बज चुके थे। हालाँकि अब श्वेता ने गाउन पहन लिया होगा, फिर भी रमेश उसे एक बार फिर उस गौरवर्णी शरीर को देखना चाहता था। वासना वश वो चुपचाप अपने कमरे से उठकर, धीरे-धीरे वह बाहर आया।

जैसे ही वह बाहर आया, उसके होश उड़ गए। इस वक्त श्वेता पूर्णतया नग्न थी, सोफे पर लेटी हुई। रमेश की बीबी का गाउन वह उतार चुकी थी। रमेश भौचक्का रह गया। तभी उसे श्वेता की आवाज सुनाई दी, "अपने कमरे के दरवाजे को बाहर से बंद कर दो और यहाँ मेरे पास सोफे पर आ जाओ।"

रमेश को वासना ने पूरी तरह से घेर लिया था। उसे समझ ही नहीं आ रहा था कि यह सपना है या सच। उसने फ़ौरन अपने कमरे के दरवाजे को बाहर से बंद किया, जहाँ उसकी बीबी और बेटा सो रहे थे।

रमेश तुरंत ही श्वेता के पास पहुँच गया। "अपने कपड़े खोल दो," श्वेता ने मोहक अंदाज़ में कहा।

रमेश के ऊपर श्वेता ने क्या जादू कर दिया था ये कहना मुश्किल था परन्तु रमेश ने फॉरेन ही अपने कपडे खोल दिए। वो फॉरेन ही उस सोफे पर लेटी हुई श्वेता के ऊपर आ गया।

वो श्वेता को यहाँ वहां किस करने लग गया। वो कोमल बदन अब उसके शरीर के नीचे था। वो श्वेता के उस हसीन बदन की कोमलता को अब हर जगह से महसूस कर रहा था। इतनी सुन्दर स्त्री का वो स्पर्श उसे अति उत्तेजित कर चूका था। उसे कुछ भी समझ नहीं आ रहा था। आज शायद उसके जीवन की सबसे हसीन रात थी। वो अपनी इस वासना में श्वेता के चेहरे के बदलते हुए भाव देख ही नहीं पाया। श्वेता के चेहरे के भाव अब खूंखार हो चले थे।

इससे पहले रमेश कुछ समझता, उसके एनल में एक चाकू बहुत तेजी से घुसा। उसकी कराह निकल गयी। चाकू उसके ऐनल में इस तरह मरोड़ा गया कि उसकी ऐनल की सभी नसें कट गईं। रमेश श्वेता को चूमना छोड़कर थोड़ा उठा, लेकिन उससे पहले कि वह कुछ और समझ पाता, चाकू के एक सधे हुए वार ने उसकी एक आँख फोड़ दी। रमेश दर्द से बुरी तरह कराह रहा था। उसके दोनों हाथ उसकी आँख पर थे, और इससे पहले कि वह कुछ कर पाता, उसकी दूसरी आँख भी उस क्रूर चाकू ने बेदर्दी से भेद दी। उसकी पत्नी और बेटा उठ गए थे। वो श्वेता का चेहरा देख ही नहीं पाया जो उसे इस दर्द में देख कर बहुत ही खुश थी ।

रमेश अपनी दोनों आँखों को मजबूती से पकड़े हुए था, अंधकारमय दर्द में डूबा हुआ, जब श्वेता ने उसके लिंग पर एक भयानक चीरा लगा दिया। धारदार चाकू ने उसके नाजुक अंग को एक झटके में काट दिया। दर्द की असहनीय टीस से रमेश की चीखें पूरे कमरे में गूँज रही थीं, उसकी आवाज़ में वह दर्द था जो शब्दों से परे था। उसकी आवाज़ काँप

रही थी, उसके शरीर से पसीना बह रहा था, और हर साँस उसके दर्द की कहानी कह रही थी।

इसके बाद, श्वेता ने बिना किसी हिचक या संकोच के उसके टेस्टिकल्स को भी चाकू से काट दिया। उसका यह हमला इतना निर्मम था कि रमेश की चेतना धीरे-धीरे खत्म हो रही थी। वह जमीन पर गिर पड़ा, अपने शरीर के हर हिस्से से तड़पता हुआ, दर्द से छटपटाता हुआ, जैसे पतझड़ में पत्तियाँ जमीन पर बिखरती हैं। उसके शरीर का हर टुकड़ा दर्द से चीख रहा था, और उसकी जीवन शक्ति धीरे-धीरे उसे छोड़ रही थी।

फिर, श्वेता ने उसकी गर्दन की ओर ध्यान दिया। उसने अनगिनत वार किए, हर एक वार के साथ रमेश की गर्दन से खून का एक और फव्वारा छूट रहा था। जैसे जैसे खून बहता गया, रमेश की जान निकलती गई। श्वेता की हँसी, जोर-जोर से, एक घृणित और सनसनीखेज ध्वनि की तरह कमरे को भर रही थी। उसकी हँसी में न केवल खुशी थी, बल्कि एक प्रकार की मुक्ति भी, जैसे मानो वह अपनी किसी गहरी तृप्ति को प्रकट कर रही हो। उसकी आँखों में एक अजीब सी चमक थी, जैसे वह किसी अनोखे खेल को खेल रही हो, जिसमें रमेश महज एक प्यादा था।

रमेश का शरीर धीरे-धीरे स्थिर होता गया, जैसे एक मोमबत्ती की लौ जो अंत में बुझ जाती है। उसकी साँसें धीमी पड़ रही थीं, और अंत में, जब उसके शरीर ने हिलना बंद कर दिया, श्वेता की हँसी कमरे में गूँज़ती रही, एक ऐसा संगीत जो एक ही समय में मृत्यु का गीत था और जीवन के खत्म होने का उत्सव भी।

रमेश की बीबी बार-बार गेट बजा रही थी, उसकी आवाज में एक अजीब सी हड़बड़ाहट थी, जैसे कोई अनहोनी होने का आभास हो रहा हो। श्वेता ने, जो कि एक सन्नाटे में खड़ी थी, अपनी उँगलियों के साथ धीरे से

गेट को खोला। उसकी आँखों में एक अजीब सी चमक थी, शायद वासना की या फिर क्रूरता की, जो स्पष्ट नहीं थी।

जैसे ही रमेश की पत्नी अंदर कदम रखने की कोशिश कर रही थी, उसके चेहरे पर हैरानी की लकीर छा गई। श्वेता के हाथों में चाकू चमक रहा था, और इससे पहले कि रमेश की पत्नी कुछ समझ पाती, श्वेता ने उसकी गर्दन पर बिना किसी रहम के अनेक वार किए। खून की बूंदें हवा में उड़ीं, और रमेश की पत्नी जमीन पर ढेर होकर गिर पड़ी, उसकी आँखें खुली रह गईं, शायद अपनी अंतिम साँस तक समझने की कोशिश में कि यह क्या हो रहा है।

रमेश, जिसकी वासना उसे हर तरह से अंधा कर चुकी थी, उसके शरीर पर भी श्वेता का क्रोध और बदला पूरी तरह नजर आ रहा था। उसके ऊपर की हर चोट, हर वार, एक कहानी कह रहा था उसकी अंधी इच्छाओं की, जो उसे अंततः मौत की ओर ले गईं।

इसी बीच, प्रद्युम्न और कमल, जो कि अभी-अभी अपने पुलिस स्टेशन पहुँचे थे, उन्हें फिर से रमेश के घर की ओर जाना पड़ा। एक ऐसी घटना जो उन्हें हिला कर रख देने वाली थी, जिसमें रमेश, उसकी पत्नी, और उनका बेटा बंटी सभी निर्ममता से मारे गए थे। घर का माहौल ही बदल गया था, हवा में खून की बदबू, और जमीन पर निश्चल शरीर, एक दृश्य बना रहे जो शब्दों में बयान नहीं हो सकता था।

कौन थी ये पागल लड़की, श्वेता? उसके मन में क्या चल रहा था जो उसने रमेश को इतनी वीभत्स मौत दी? ये सवाल प्रद्युम्न और कमल के दिमाग में घुमड़ रहे थे, उनके चेहरे पर उलझन और गुस्सा स्पष्ट था। और सबसे बड़ा प्रश्न, क्या पुलिस उसे पकड़ पायेगी? इस जवाब की तलाश में, पुलिस की टीम को एक ऐसे रहस्य से पर्दा उठाना था, जो महज़ एक हत्या तक सीमित नहीं था, बल्कि इंसानी मन की उन अंधेरी गलियों में झांकने

का जरिया था, जहां क्रूरता अपने सबसे भयावह रूप में छिपी बैठी थी। यह मामला सिर्फ खून से सने सबूतों और अपराध के संकेतों तक सीमित नहीं था, बल्कि वह नफरत, लालच और विकृत मानसिकता की गहरी परतों को भी उजागर करने वाला था, जो किसी इंसान को दरिंदा बनने पर मजबूर कर देती थी।

* ϕ *

एपिसोड दो - खौफनाक खेल

"पापा, मुझे ये सब पसंद नहीं है," श्वेता ने एक अनमने, बेबस स्वर में कहा, उसकी आँखों में एक अजीब सी उदासी झलक रही थी, जैसे वह किसी अनचाही दुनिया में फँसी हो।

"कोई बात नहीं, मुझे तो पसंद है ना। मैंने तेरी माँ से शादी ही तुझे देख कर की थी। वरना उस बुढ़िया से कौन शादी करता?" आदर्श ने एक भद्दी, गंदी हँसी हँसते हुए कहा। उसकी आवाज में एक अनैतिक आनंद का पुट था, उसने श्वेता को अपनी ओर खींचते हुए अपनी बाहों में जकड़ लिया।

उसने धीरे-धीरे, लेकिन बेहद निर्दयता से श्वेता के सारे वस्त्र उतार दिए, जो उसके शरीर से छूटते हुए जमीन पर बिखर गए। फिर उसने अपने कपड़े भी खोले, उन्हें एक कोने में फेंक दिया, जैसे वह अपने वास्तविक रूप को बेनकाब कर रहा हो। वह सर्दी की रात थी, पर कमरे में ऑटोमेटेड हीटर चालू थे, जो कमरे के तापमान को सामान्य रख रहे थे। यह एक साउंड प्रूफ कमरा था, जहाँ कोई भी आवाज बाहर नहीं जा सकती थी, एक दुनिया जहाँ सिर्फ उन दोनों की साँसों की आवाज सुनाई दे रही थी।

आदर्श ने श्वेता के पूर्ण दूधिया शरीर को देखा, उसकी आँखें उसके शरीर के हर वक्र पर ठहर रही थीं, जैसे वह किसी कलाकृति को निहार रहा हो। उसने कभी ऐसी सुंदरता नहीं देखी थी, श्वेता का शरीर एक अद्भुत रचना थी। उसकी किस्मत बहुत अच्छी थी, श्वेता के पिता का देहांत हो गया था, और इसके बाद श्वेता की माँ, जो कि दुख से टूटी हुई थी और एक विशाल फार्मा कंपनी की मालकिन, उसके पास आई थी। आदर्श ने इस मौके का पूरा फायदा उठाया, उसने श्वेता की माँ के करीब जाने की योजना बनाई, उसके दुख को अपनी सीढ़ी बनाया, और अंत में श्वेता तक पहुँच

गया। उसकी हर कार्रवाई एक गहरी, कपटी योजना का हिस्सा थी, जिसका लक्ष्य केवल धन और श्वेता का शरीर ही था।

उसकी लाटरी निकल गई जब श्वेता की माँ ने शादी के लिए हाँ कर दी। इस तरह, वह न सिर्फ एक दो हजार करोड़ की कंपनी का मालिक बन गया, बल्कि श्वेता जैसी अति सुंदर लड़की का अब वह जब चाहे तब शोषण कर सकता था।

आदर्श अभी अपनी किस्मत पर नाज कर रहा था, उसके चेहरे पर एक गर्व की मुस्कान थी, और उसकी नजरें श्वेता के नग्न शरीर पर टिकी हुई थीं, कि अचानक श्वेता ने उस पर एक स्प्रे बोतल से स्प्रे किया।

"ये क्या कर रही है? ये क्या है?" आदर्श ने गुस्से में प्रश्न किया, उसकी आवाज में हैरानी और नाराजगी का मिश्रण था।

"कुछ नहीं, तुम्हारे मुँह से अब शराब की बदबू नहीं आएगी," श्वेता ने शांत, लेकिन स्पष्ट आवाज में जवाब दिया, उसके चेहरे पर एक धूर्त मुस्कान थी।

आदर्श थोड़ा हँसा, उसकी हँसी में एक अजीब तरह का आत्मविश्वास था, और उसने श्वेता को अपनी बाहों में जकड़ लिया, मानो उसका इरादा उसे अपने वश में करने का हो।

आदर्श अभी उसे किस कर ही रहा था कि उसके ऐनल में एक चाकू बहुत ही जोर से घुस गया। आदर्श की चीख निकल गई, एक ऐसी आवाज जो दर्द की गहराई को बयान कर रही थी, और धीरे-धीरे श्वेता ने वह चाकू उसके ऐनल में घुमाया, हर घुमाव के साथ आदर्श का दर्द बढ़ता जा रहा था। उसके शरीर से बहुत खून बह रहा था, और वह जोर-जोर से चीख रहा था, उसकी आवाज में दर्द की हर परत झलक रही थी।

वह श्वेता को धक्का देकर अलग हुआ, उसके हाथ खून से रंगे हुए थे। श्वेता की आँखों में अंगारे जल रहे थे, लेकिन उसके चेहरे पर एक अजीब सी, पागलपन भरी हँसी थी, जैसे कोई दानव अपनी जीत का आनंद ले रहा हो। उसकी हँसी में एक ऐसी हिंसक खुशी थी जो उसके अंदर के क्रोध और बदले की भावना को दर्शा रही थी।

"क्यों पापा, क्या हुआ? आइए पास आइए," श्वेता ने बहुत ही मोहक, लेकिन भयानक अंदाज में कहा, उसकी आवाज में एक घातक मीठास थी।

"तू क्या पागल हो गई है?" आदर्श ने अपने पृष्ठभाग पर हाथ रखकर कहा, उसकी आवाज में दर्द और हैरानी का मिश्रण था।

इससे पहले कि वह कुछ और समझ पाता, श्वेता ने चाकू से उसके लिंग को काट दिया। आदर्श की चीख निकली, एक ऐसी आवाज जो दर्द की सीमा को बयान कर रही थी। देखते ही देखते, श्वेता ने उसकी एक आँख पर चाकू घुसा दिया, और फिर दूसरी आँख पर, हर वार के साथ आदर्श की चीख कमरे में गूँजती रही।

श्वेता उसे देख रही थी, उसके चेहरे पर एक शैतानी, क्रूर मुस्कान थी। "पापा, मजा आ रहा है?" उसने कहा, और फिर उसने उसके टेस्टिकल्स को भी काट दिया। आदर्श जोर-जोर से चीख रहा था, उसकी आँखों में अब अंधकार था, लेकिन उसकी हाथ जोड़कर विनती कर रही थी, "बेटा, माफ़ कर दो।"

"पापा, एन्जॉय कीजिए। आप क्या थोड़ा सा भी दर्द सहन नहीं कर सकते? मुझे तो मजा आ रहा है ना," श्वेता ने बहुत ही क्रूर, लेकिन मोहक ढंग से हँसते हुए कहा।

इस साउंड प्रूफ कमरे से आदर्श की चीख बाहर नहीं जा सकती थी, अन्यथा उसकी करुण वेदना सुनकर घर के सभी नौकर वहां आ जाते।

श्वेता ने फिर उसकी गर्दन पर चाकू से ऐसा वार किया कि उसकी जुगुलर वेन कट गई। खून का फौव्वारा, एक भयानक दृश्य बनाते हुए, उसके शरीर से बहने लगा।

कुछ ही देर में, आदर्श की मौत हो गई, ये कहना मुश्किल था कि उसकी मौत दर्द से हुई या खून के बहाव से। पिछले एक साल से आदर्श श्वेता का शोषण कर रहा था, और उसके इस कुकर्म ने एक मासूम लड़की को इतनी खतरनाक और पागल हत्यारी बना दिया था। श्वेता किचन नाइफ से ऐसे खूंखार प्रहार कर सकती थी जो शायद कोई पेशेवर हत्यारा भी नहीं कर पाता।

श्वेता आदर्श के मृत शरीर को देखकर एक अजीब, खौफनाक हँसी हँस रही थी। "आज मुझे भी बहुत मजा आया, पापा।" उसने पागलों जैसे हँसते हुए, आदर्श के गले पर चाकू मारते हुए कहा। आदर्श के शरीर से बेइंतिहा खून बह रहा था, और श्वेता को यह खून देखना बहुत पसंद था। कुछ ही देर में, शायद चार से पांच लीटर खून बह गया था, और श्वेता अभी भी अपने किचन नाइफ से आदर्श के शरीर को बार-बार भेदती जा रही थी, एक ऐसी क्रूरता जो किसी अंधेरे सपने से कम नहीं थी।

श्वेता की माँ को शायद कुछ पूर्वाभास हो गया था। उन्होंने दरवाजे पर एक अधीर दस्तक दी, एक ऐसी आवाज जो किसी अनजानी उथल-पुथल को महसूस कर रही थी, और श्वेता ने धीरे से वह दरवाजा खोल दिया।

दृश्य जो उन्होंने देखा, उनके सारे अनुमानों की पुष्टि करता था - आदर्श का नग्न, मृत शरीर एक तरफ पड़ा था, उसकी काया खून से रंगी हुई, और श्वेता खुद नग्न थी, पर उसका शरीर खून से सना हुआ था। श्वेता की माँ ने सब कुछ एक ही नजर में समझ लिया था।

"इस पापी को ये सजा तो मिलनी ही थी। परन्तु गलती इसकी नहीं, मेरी थी। मैं इसकी नियत नहीं समझ पायी, मेरी बच्ची," मलाइका ने भरी, कांपती हुई आवाज में कहा, उसके चेहरे पर एक अपराधबोध की छाया थी। उसने श्वेता को गले से लगा लिया, उसकी बाहों में उसकी बेटी का कम्पित शरीर जैसे एक सुरक्षित जगह पा रहा था।

उन्होंने फिर उस किचन नाइफ को अपने हाथ में लिया, जो अभी भी खून से लथपथ थी, और आदर्श के उस बुरी तरह से गोदे हुए मृत शरीर पर अनेकानेक प्रहार किए, शायद इतने ज्यादा कि श्वेता ने भी नहीं किए होंगे। यह क्रोध की निकासी थी या फिर एक पचपन वर्षीया स्त्री का कानून को धोखा देने के लिए सबूत तैयार करने का प्रयास, यह कहना मुश्किल था।

उन्होंने श्वेता को देखते हुए, एक गंभीर आदेश दिया, "तुम बाथरूम में जाकर नहा लो, और कपड़े पहनकर किसी मॉल में मूवी देखने चली जाओ। अभी।"

श्वेता ने हामी भरी और वैसा ही किया। उसके चेहरे पर अभी भी वही अजीब, बेहोशी की मुस्कान थी। थोड़ी ही देर में, मलाइका ने पुलिस को फोन कर दिया और अपने आप को सरेंडर कर दिया, एक ऐसा निर्णय जो उसके मातृत्व के प्रेम और अपराधबोध का परिणाम था। कुछ समय बाद, उन्हें चौदह वर्ष की जेल हो गई, एक सजा जो उन्होंने अपनी बेटी की रक्षा के लिए स्वीकार की थी।

आज उनकी जेल का पहला वर्ष पूरा हो गया था, जब श्वेता उनसे मिलने आई थी, उसकी आँखों में एक अजीब सी चमक थी, शायद कृतज्ञता की, या शायद उस हिंसा की जो उन्होंने उसके लिए सहन की थी।

"मम्मी, आज मैंने अपना छठा शिकार कर लिया है," श्वेता ने अपनी आवाज में एक मासूमियत भरते हुए कहा, जैसे किसी बच्चे ने कोई खेल

जीत लिया हो, लेकिन उसके शब्दों में छिपी हुई ख़तरनाक गंभीरता पूरी स्थिति को अजीब बना रही थी।

"बेटा, ये खूनी खेल बंद कर दो," श्वेता की माँ ने न चाहते हुए भी चिंता और डर से उसकी ओर देखा। उनकी आँखों में घबराहट थी, जैसे वे हर रोज़ एक नई चिंता से जूझ रही हों।

उस जेल में मौजूद पुलिस प्रशासन और बाकी कैदी भी मलाइका से कुछ हद तक हमदर्दी रखते थे। वे समझ रहे थे कि इस महिला ने अपने पति की क्रूर हत्या जैसी हरकतें की हैं, परंतु किसी गहरे कारण के तहत। हर दिन की जेल की सख्त जिंदगी और मलाइका की अजीबोगरीब प्रतिक्रियाओं को देख, उन्हें यह महसूस होने लगा था कि इस महिला की मानसिक स्थिति बाकि लोगो से भिन्न है। वह एक ऐसी माँ थी जो अपनी बेटी के साथ लगातार किसी अज्ञात जंग में उलझी हुई लगती थी। कोई ऐसा राज़ था उन माँ बेटी का जिसने उनके पूरे जीवन को उथल पुथल कर दिया था।

मलाइका और उसकी बेटी के बीच की बातें सुनकर सबको यह अंदाज़ा हो जाता था कि कुछ गड़बड़ जरूर थी, लेकिन कोई भी इस गड़बड़ी की तह तक जाने के लिए इच्छुक नहीं था। ऐसा लगता था जैसे वे सब इस उलझन से अपनी आँखें फेरकर जी रहे थे, क्योंकि उनके सामने अपने खुद के जीवन की जद्दोजहद थी। वे जानते थे कि कुछ बड़ा गलत हो रहा था, लेकिन उस रहस्य में झाँकने की हिम्मत और रुचि किसी में नहीं थी।

मलाइका ने अपने पति का खून किया, और यह खबर सबके लिए एक चौंकाने वाली बात थी। किसी को यकीन नहीं हो रहा था कि वह शांत और मासूम दिखने वाली महिला ऐसी घातक हरकत कर सकती थी। उसने अपने जुर्म को बिना किसी कशमकश के क़बूल कर लिया था, जैसे

जो कुछ भी घटित हुआ हो, वह उसके लिए कोई बड़ी बात नहीं थी। यह उसके अजीब व्यवहार को और भी संदिग्ध बना देता था।

कहीं न कहीं उसकी बेटी की पागलपन जैसी हरकतें और उसके पति की हत्या के बीच कोई गहरा संबंध था। यह एक अनकहा सच था, जिसे लोग महसूस तो करते थे, लेकिन किसी में इसे उजागर करने की हिम्मत नहीं थी। वे आपस में इस बारे में गॉसिप करते थे, लेकिन कोई भी इसे लेकर कोई ठोस विचार नहीं रखना चाहता था। बस यही विचारशीलता और चुप्पी जेल में हावी थी, और मलाइका की कहानी की गहराई में डूबने का साहस किसी को नहीं था।

"जब तुम छूट कर आओगी, तब ही ये खेल बंद होगा," श्वेता ने निःसंकोच, एक दृढ़ता के साथ कहा, जैसे इस खेल का हिस्सा बनने का कोई अपराध नहीं हो, जैसे ये कोई और जद्दोजहद नहीं बल्कि एक जरूरी कार्य हो।

"बेटा, पर तुम्हें कुछ हो गया था। ये खेल बहुत ही खतरनाक है," श्वेता की माँ ने फिर से अपनी चिंता जताई, उनके स्वर में माँ की ममता और डर की मिलीजुली भावनाएँ थीं। "तुम जो कर रही हो, वह सिर्फ़ तुम्हारी नहीं, सबकी ज़िन्दगी को खतरे में डाल सकता है।"

"माँ, हो गया तो हो गया। अब कोई फर्क नहीं पड़ता। तुम बस कोशिश करो, जल्दी बाहर आओ," श्वेता की आवाज़ में एक ताजगी थी, जैसे उसने इस सबकी आदत बना ली हो। उसकी आँखों में एक अजीब सी ललक और आक्रोश था, जो किसी भी लाज़-लिहाज से कहीं दूर था।

श्वेता की माँ चुप हो गई। वह बस अपनी बेटी को देख रही थी, उसकी आँखों में एक तरह की घबराहट और समझदारी का मिलाजुला प्रभाव था। वह जानती थी कि पिछले दो सालों में उनकी बेटी ने बहुत कुछ बदल लिया था। वो सिर्फ़ अपनी फार्मा कंपनी की नहीं, बल्कि अपनी पूरी

ज़िन्दगी की मालिक बन चुकी थी। ट्रायल के दौरान, एक साल की गिरफ्तारी और फिर सजा के बाद, उसने न सिर्फ़ अपनी मर्जी से अपने फैसले लेने की ताकत पा ली थी, बल्कि उसने उन रास्तों पर चलने का साहस भी किया था जिनसे बाकी लोग दूर भागते थे।

अब वह बचपन की श्वेता से कहीं अधिक जटिल और कठिन हो चुकी थी।

हालाँकि श्वेता उसे सब कुछ बताती थी। आदर्श ने एक साल तक जो श्वेता का शोषण किया, उसने उसकी मानसिक स्थिति को पूरी तरह से नष्ट कर दिया था। उस एक साल के दौरान, श्वेता ने जो दर्द सहा था, वह उसकी सोच और संवेदनाओं को पूरी तरह से विकृत कर चुका था। अब उसे लोगों के खून करने में एक अजीब सा सुकून मिलने लगा था। यह खौ़फनाक बदलाव श्वेता के व्यक्तित्व को पूरी तरह से बदल चुका था। श्वेता के पिता का तीन साल पहले निधन हो चुका था, और उसकी मौत ने उसके जीवन को एक गहरे अंधेरे में धकेल दिया था। जब तक वे जीवित थे, श्वेता की दुनिया में सब कुछ ठीक था। पिता का मार्गदर्शन और साया उसे मजबूती देता था, लेकिन उनके बाद जो हुआ, वह श्वेता और उसकी माँ के लिए एक अनकहा दुःस्वप्न बनकर आया।

श्वेता की माँ ने शायद अपनी जिंदगी की सबसे बड़ी गलती तब की जब उसने आदर्श से शादी करने का फैसला किया। उन्हें लगा था कि इस कदम से श्वेता को पिता का साया मिल जाएगा, लेकिन उन्हें यह समझने में समय लगा कि श्वेता के लिए यह कदम पूरी तरह से उल्टा साबित होगा। श्वेता केवल 18 वर्ष की थी, और इस उम्र में बच्चों को दोनों माता-पिता की मदद और गाइडेंस की आवश्यकता होती है। आदर्श पहले से ही उनके परिवार के कर्मचारियों में से एक था और श्वेता के पिता के

लिए वह बहुत सम्माननीय और भरोसेमंद था। इसलिए, श्वेता की माँ ने सोचा था कि आदर्श उसके लिए एक अच्छा जीवनसाथी साबित होगा।

लेकिन आदर्श से विवाह करके श्वेता की माँ ने बहुत बड़ी भूल की थी, जो उसे और श्वेता दोनों को भारी पड़ा। आदर्श ने अपने रिश्ते में एक पूरी नई भूमिका निभाई, जिससे श्वेता का जीवन धीरे-धीरे एक नर्क में बदल गया। अब श्वेता पूरे पुरुष समाज से बदला लेने की आंतरिक भावना से प्रेरित हो चुकी थी। वह अपने अतीत की घृणित यादों और आदर्श के द्वारा किए गए अत्याचारों से बाहर निकलने का तरीका ढूंढ रही थी।

श्वेता की माँ चाहकर भी इस राज़ को सबके सामने नहीं ला सकती थी, क्योंकि वह अपनी बेटी से दिल और जान से प्यार करती थी। उसे यह डर था कि यदि श्वेता का सच्चाई सामने आई, तो कहीं वह समाज को अपनी ही बेटी के खिलाफ खड़ा न कर दे। श्वेता की माँ को अब यह चिंता सता रही थी कि उसे जेल में अपने बचे हुए तेरह साल बहुत भारी लगने लगे थे। यह तेरह साल न केवल उसके लिए, बल्कि श्वेता के लिए भी भयावह हो सकते थे। वह सोचती थी, "पता नहीं श्वेता और कितनी जानें लेगी, और कहीं इन सब में उसे कोई गंभीर नुकसान न हो जाए।" वह अपनी बेटी के ख़ौफनाक रास्ते से परेशान थी, और डरती थी कि श्वेता कहीं खुद ही इस अंधेरे में पूरी तरह से खो न जाए।

*** ф ***

"सर, ये क्या है?" कमल ने बेतहाशा, एक ही सांस में पूछा, उसकी आवाज़ में घबराहट और डर साफ़ झलक रहा था। उसकी आँखें रमेश की लाश पर स्थिर थीं, जैसे वह यकीन करने की कोशिश कर रहा हो कि वही खून, वही तरीका एक बार फिर से हुआ है।

"हां, लगता है कि हमारे शहर में अब एक सीरियल किलर आ गया है," प्रद्युम्न ने गंभीरता से जवाब दिया, उसकी आवाज़ में तनाव था, जैसे यह केवल एक हत्या नहीं, बल्कि एक खौ़फनाक पैटर्न बन चुका हो।

"इस बच्चे को भी नहीं छोड़ा," कमल ने बंटी की नग्न लाश की ओर इशारा करते हुए कहा, उसका चेहरा उत्तेजना और गुस्से से भर गया था। यह हत्या उनके लिए बस एक और अपराध नहीं था, बल्कि एक भयावह संकेत था कि किलर किसी भी सीमा तक जा सकता था।

"हां," प्रद्युम्न ने संक्षिप्त में जवाब दिया, उसकी आँखें लाशों पर ठहरी हुई थीं। रमेश की नग्न लाश बगल में पड़ी थी, और उसकी पत्नी के गाउन को सलीके से पहनने के बावजूद उसकी गला काटने की छवि डरावनी थी। एक ठंडी और योजनाबद्ध हत्यारी शैली को दर्शाता था। और बंटी को भी ठीक उसी तरीके से मारा गया था—गला काटकर, जैसे सब कुछ योजनाबद्ध और जानबूझकर किया गया हो।

"कमल, तुमने एक बात नोट की?" प्रद्युम्न ने धीरे से पूछा, उसकी आँखों में गहरे सोचने की ललक थी।

"क्या सर?" कमल ने सिर झुका कर पूछा, अब उसकी पूरी तवज्जो मामले पर थी, वह जानता था कि हर एक छोटी सी जानकारी उन्हें किलर तक पहुँचाने में मदद कर सकती है।

"किलर को किचन नाइफ से क़त्ल करना बखूबी आता है," प्रद्युम्न ने कहा, और फिर रुकते हुए पूरे मामले का जायज़ा लिया। "पाँच लाशें अब तक हम देख चुके हैं। दो न्यू झालाना एरिया में और तीन यहाँ।"

"हां सर, और यह इतना आसान नहीं है," कमल ने सिर झुकाया, फिर गहरी साँस ली। "किचन नाइफ से जुगुलर वेन काटना बहुत ही मुश्किल है। यह एक कुशल किलर की निशानी है, जो इसे बड़ी आसानी से और बिना किसी घबराहट के कर रहा है।"

"इसका मतलब यह है कि किलर चाकू का इस्तेमाल बखूबी जानता है।" प्रद्युम्न ने सिर हिलाते हुए कहा। उसकी आँखें कुछ तलाश रही थीं, जैसे यह मामला उसकी सोच से कहीं आगे बढ़ चुका हो।

"एक बात और सर," कमल ने कहा, उसकी आवाज़ में एक और संभावना थी, "शायद यह किलर कोई लड़की हो।"

"वो भी कोई खूबसूरत लड़की?" प्रद्युम्न ने पूछा, उसकी आँखों में एक अजीब सी उत्सुकता और सोच का मिश्रण था। यह सिर्फ एक अंदाज़ा नहीं, बल्कि किलर की मानसिकता और पद्धतियों के बारे में एक संभावित सुराग था।

"ऐसा क्यों, सर?" कमल ने चौंकते हुए पूछा, उसकी आँखों में हैरानी और विस्मय था, जैसे वह खुद भी इस विचार को जाँच चुका हो।

प्रद्युम्न चुप था, उसकी आँखों में एक गहरी साजिश का अनुमान था, और वह पूरी तरह से इस मामले को समझने की कोशिश कर रहा था, जैसे वह किलर के दिमाग में उतरने का प्रयास कर रहा हो।

"क्योंकि वो मर्दों को अपनी कामुकता से आकर्षित करती है, फिर उन्हें उन्हीं के घर में मौजूद किचन नाइफ से बेरहमी से मार डालती है," प्रद्युम्न ने बड़ी सधी हुई आवाज़ में कहा, उसके शब्दों में एक घातक योजना और एक ठंडी सोच की छाया थी। वह मामले को बहुत गहरे समझ चुका था, और हर एक कदम को ध्यान से जोड़ रहा था।

"क्या बात है, सर! मैं भी यही सोच रहा था। लेकिन खूबसूरत वाली बात... मुझे नहीं पता, क्योंकि मर्द तो किसी भी तरह से अट्रैक्ट हो जाते हैं," कमल ने हलके से हंसी मजाक में जवाब दिया, लेकिन उसकी आवाज़ में संजीदगी थी। वह मानता था कि पुरुषों की कमजोरी का कोई फर्क नहीं पड़ता था, परंतु प्रद्युम्न के विश्लेषण में कहीं न कहीं एक सच्चाई छिपी हुई थी।

"हाहा, नहीं कमल," प्रद्युम्न ने हलके से मुस्कुराते हुए कहा, लेकिन उसकी आँखों में गंभीरता थी। "ध्यान से देखो। उस पुरुष की लाश सोफे के पास पड़ी है, और उसकी पत्नी और बेटे की लाश बैडरूम के गेट के पास। यह कोई साधारण हत्या नहीं है।"

कमल को पहले तो कुछ समझ नहीं आया, लेकिन फिर प्रद्युम्न की बात पर ध्यान देते हुए वह चुप हो गया। उसकी आँखों में अचानक एक विचार की चिंगारी जली।

"तो सर, इससे लड़की की खूबसूरती का क्या कनेक्शन है?" कमल ने आश्चर्य से पूछा, क्योंकि वह अब तक इस पूरी कड़ी को जोड़ नहीं पा रहा था। उसका सवाल पूरी तरह से तर्कपूर्ण था, लेकिन प्रद्युम्न का दृष्टिकोण कहीं और था।

प्रद्युम्न ने गहरी सांस ली और फिर से कमल की आँखों में देखा। "कमल, खूबसूरती केवल शारीरिक आकर्षण नहीं होती। यह किसी की मासूमियत, उसकी चाल, उसका तरीका भी हो सकता है। वह महिला एक ऐसी चालाक रणनीति का हिस्सा हो सकती है, जिससे वह मर्दों को अपने जाल में फंसा लेती है। वह जानती है कि कैसे उनका विश्वास जीतना है और फिर उसी भरोसे को अपने फायदे के लिए इस्तेमाल करती है।"

कमल को अब कुछ समझ आ रहा था, लेकिन वह अब भी पूरी तरह से इस विचार पर विश्वास करने के लिए तैयार नहीं था। उसने सिर झुकाया और गहरी सोच में डूब गया। यह हत्या की योजना एक अजीब सी चालाकी और सटीकता से भरी हुई लग रही थी, और कहीं न कहीं, यह किसी परफेक्ट किलर की सोच का परिणाम था।

"इसका मतलब वह लड़की वहां सोफे पर सो रही होगी, और उसका पति, पत्नी और बच्चा अंदर के कमरे में होंगे। रात के समय, वह पुरुष खुद ही बाहर उठकर आया होगा और उसने बैडरूम का दरवाजा

लॉक कर लिया," प्रद्युम्न ने ध्यान से विचार करते हुए कहा, उसकी आवाज़ में एक सटीकता थी, जैसे वह हत्या की पूरी योजना को धीरे-धीरे समझने लगा हो।

"समझ गया, सर। वरना, उसकी चीखें सुनकर उसकी पत्नी बाहर आ जाती। लेकिन वह बाहर तब आई, जब तक उसका पति मर चुका था," कमल ने सिर हिलाया, अब उसकी समझ में यह सब आ चुका था। वह सच्चाई के करीब पहुँच चुका था, लेकिन उसे महसूस हो रहा था कि यह सब उतना आसान नहीं था, जितना लगता था।

"बिलकुल, कमल," प्रद्युम्न ने ध्यान से कहा, उसकी आँखों में एक चुप्पी थी जो गहरे रहस्यों को उजागर कर रही थी। "तो ये सीरियल किलर एक खूबसूरत लड़की है, जिसके लिए पुरुष अपनी पत्नी को कमरे में बंद कर, बाहर खुद आकर फंसा लेते हैं। वह लड़की इतनी आकर्षक है कि वह अपने जाल में मर्दों को इस तरह फंसा लेती है, कि वे अपनी पत्नी को खुद बंद कर देते हैं।"

"और सर," कमल ने हलके से मुस्कुराते हुए चुटकी ली, "अपने कपड़े भी खुद ही उतार देते हैं।" उसके मजाक में एक हलकी सी बेबाकी थी, लेकिन प्रद्युम्न का ध्यान पूरी तरह से मामले पर था।

प्रद्युम्न ने चुपचाप नीचे झुका और रमेश की मृत लाश की आँखों में गौर से देखा। उसकी आँखें गहरे गहरे विचारों में डूबी थीं, जैसे वह किसी छिपे हुए पैटर्न को समझने की कोशिश कर रहा हो। फिर उसने कमल की तरफ देखा और अपनी आवाज़ में ठहराव लाते हुए कहा, "बस, दोनों घरों में जो कत्ल हुआ है, उसमें एक ही अंतर है।"

"क्या सर?" कमल ने उसकी ओर देखा, उसकी आँखों में जिज्ञासा और असमंजस था। वह जानता था कि प्रद्युम्न कुछ बहुत अहम चीज़ बता रहा है, लेकिन वह उस अंतर को अभी तक नहीं समझ पा रहा था।

प्रद्युम्न की आँखों में एक गहरी चुप्पी थी, जैसे वह उस अंतर को पूरी तरह से देख चुका हो और अब वह उसे जाहिर करने के लिए तैयार था।

"यह ही कमल, उस पुरुष को पहले ड्रग दिया गया था, लेकिन इस पुरुष को नहीं," प्रद्युम्न ने गंभीरता से कहा, उसकी आवाज़ में गहरी सोच छिपी थी। वह इस मामले के हर पहलू को बारीकी से देख रहा था और एक-एक कड़ी जोड़ने की कोशिश कर रहा था।

"परंतु ऐसा क्यों, सर?" कमल ने पूछा, उसकी आँखों में सवाल था, जैसे वह पूरी कहानी को समझने की कोशिश कर रहा हो, लेकिन कहीं न कहीं वह उलझा हुआ था।

"पता नहीं," प्रद्युम्न ने माथे पर हाथ फिराया, उसकी आवाज़ में संदेह था। "शायद उस लड़की के पास ड्रग्स खत्म हो गए होंगे। वह शायद न्यू झालाना कॉलोनी में किसी और को मारने गई थी, लेकिन यह व्यक्ति खुद उसे अपने घर ले आया।"

"और उस सीरियल किलर लड़की को यह लगा, चलो, आज डबल शिकार करते हैं," कमल ने जोड़ा, उसकी आँखों में अब यह मामला पूरी तरह से साफ हो चुका था। वह समझ गया था कि किलर का मकसद केवल हत्या करना है, कुछ और नहीं।

"हां, कमल," प्रद्युम्न ने सिर हिलाया, लेकिन उसकी आवाज़ में थोड़ी चिंता भी थी। "परंतु यह पागल लड़की है, हमें उसे जल्दी ढूंढना होगा।"

"कैसे, सर?" कमल ने फिर से पूछा, उसकी आवाज़ में परेशानी थी। "इस शहर में ठरकी मर्दों की कमी नहीं है, और वो लड़की बिना किसी हथियार के सिर्फ किचन नाइफ से ही जान ले सकती है।"

"हां, कमल," प्रद्युम्न ने गहरी सांस ली, "हमारे पास कोई भी क्लू नहीं है कि कैसे हम उस लड़की को पकड़ें।"

"सर, आप बोले तो मुझे एक क्लू दिख रहा है," कमल ने उत्सुकता से कहा, उसकी आँखों में एक हलकी सी उम्मीद थी।

"क्या, कमल?" प्रद्युम्न ने आश्चर्य से पूछा, उसकी आँखों में सवाल था, जैसे वह एक नई दिशा में सोचने की कोशिश कर रहा हो।

"सर," कमल ने धीरे से कहा, "उस लड़की का मकसद पैसे चुराना नहीं है।"

"हां," प्रद्युम्न ने धीरे से कहा, उसकी आँखों में एक समझदारी थी। "वह सिर्फ मर्दों को लुभाती है और फिर उन्हें मार डालती है।"

"बिलकुल," कमल ने कहा, उसके चेहरे पर थोड़ी सटीकता थी। "और वह ऐसे मर्दों की तलाश करती है जो शायद मिडल क्लास हों।"

"हाँ," प्रद्युम्न ने सहमति जताई, "यह दोनों मकान जहाँ इतने कत्ल हुए, मिडल क्लास लोगों के ही हैं।"

"इसका मतलब," कमल ने गहरी सांस ली, "वह लड़की मिडल क्लास के मर्दों से नफरत करती है और ऐसा समय चुनती है जब कोई उसे देख न पाए।"

"हाँ," प्रद्युम्न ने सिर झुका कर कहा, "और वह ऐसी लोकैलिटी में जाती है जहाँ सीसीटीवी आदि नहीं होते।"

"यस सर," कमल ने ध्यान से कहा, "तो हमारे पास ये क्लू तो है कि सीरियल किलर एक लड़की है, जो शायद थोड़ी पागल है, लेकिन किचन नाइफ की एक्सपर्ट है। वह केवल मर्दों को टारगेट करती है और शहर के छोटे तबके के इलाकों को टारगेट करती है।"

"बिलकुल ठीक, कमल," प्रद्युम्न ने उसकी बात से सहमति जताई, "लेकिन ऐसे छोटे इलाके तो बहुत सारे हैं।"

"हाँ, सर," कमल ने सिर झुका कर कहा, "मेरा क्लू कुछ और है।"

"क्या?" प्रद्युम्न ने हैरान होकर पूछा, उसकी आँखों में अब उम्मीद थी।

कमल ने बाहर खड़ी मीडिया की भीड़ की ओर इशारा किया, "मीडिया हमसे ऑफिसियल स्टेटमेंट मांग रहा है।"

"मैं समझा नहीं, कमल," प्रद्युम्न ने अपनी भौंहें चढ़ाईं, "मीडिया स्टेटमेंट मांग रहा है और क्लू क्या कहना चाहते हो?"

"यह ही, सर," कमल ने गंभीर होकर कहा, "हम मीडिया को ये सब बता दें।"

"परंतु कमल," प्रद्युम्न ने शंका जताई, "इससे तो वह पागल लड़की सतर्क हो जाएगी।"

"हाँ, परंतु वह डेस्पेरेट भी हो जाएगी," कमल ने एक तेज़ सोच के साथ कहा। "हम उन्हें बताएंगे कि अगर कोई सुंदर लड़की अनजान रास्ते पर दिखे, तो पहले पुलिस को फोन करें।"

"कौन पुलिस की इतनी सुनता है, कमल?" प्रद्युम्न ने उसकी ओर देखा, "कोई फोन नहीं करेगा।"

"सर, आप समझे नहीं," कमल ने मुस्कुराते हुए कहा, "हम उस लड़की तक यह खबर पहुंचा रहे हैं, और मैं इसमें हीरो बनूँगा। जैसे मैं हूँ, मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता कि वह लड़की कितनी सुंदर है। मैं अपने आप को इतना प्रमोट करूँगा कि वह पागल लड़की मुझे अपना टारगेट बनाने का चैलेंज ले लेगी।"

"तुम्हे ऐसा क्यों लगता है कि वह कोई चैलेंज लेगी?" प्रद्युम्न ने गहरी सोच में डूबते हुए पूछा।

"सर," कमल ने गंभीर होकर कहा, "इस लाश को देखिए। इसका खून वह नहीं करना चाहती थी। उसने किया क्योंकि उसे लगा कि चलो, एक और खून किया जाए। देखूँ, मैं बिना स्प्रे के भी कर सकती हूँ क्या?"

"हम्म," प्रद्युम्न ने उसकी बात को समझा और सिर झुका कर सोचा। "वैसे भी हमारे पास कोई और क्लू नहीं है। कोई सीसीटीवी नहीं, कोई गवाह नहीं। किसी ने उसे देखा नहीं। चलो, ये ट्रिक आज़माकर देख लेते हैं।"

प्रद्युम्न और कमल ने एक योजना तैयार कर ली थी। मीडिया में खबर फैला देंगे, लेकिन यह उन्हें कितना फायदा देगा, यह तो समय ही बताएगा। इस शहर में एक कातिल आ चुकी थी, जिसका हर हत्या को खेल की तरह लेना एक आदत बन चुका था। अब इस शहर में खौ़फनाक खेल शुरू हो चुका था।

* ϕ *

एपिसोड तीन - अनजान साज़िश

“बेटा, आपको बहुत लेट हो गया आज,” उस बुज़ुर्ग बटलर ने धीरे से कहते हुए खाने से भरी प्लेट टेबल पर रख दी। उसके चेहरे पर एक प्रकार की चिंता और परवाह का मिश्रण था, जैसे वह जानता हो कि कुछ गड़बड़ है, लेकिन वह सिर्फ अपनी ड्यूटी निभा रहा था ।

श्वेता नींद से जगी, आँखें मलते हुए और बेमन से बिस्तर से उठी। रात के सात बज चुके थे, और वह दिन भर से सो रही थी। सुबह-सुबह अपनी माँ से जेल में मिलकर आयी थी, उसके बाद लगभग बारह बजे तक उसने पूरी तरह से खुद को थककर बिस्तर में डाल लिया था।

“हैलो, खान चाचा,” श्वेता ने सुस्त कदमों से बटलर की ओर मुड़ते हुए कहा, उसकी आवाज़ में थकावट और कुछ हद तक जिंदगी के बोझ की झलक थी। उसकी आँखें अब भी भारी थीं, जैसे उसने किसी गहरे सपने में खोकर अपनी सारी ऊर्जा खींच ली हो।

“लगता है, आपकी रात काफी ज्यादा एक्साइटिंग थी,” खान चाचा ने श्वेता के थके चेहरे को देख कर चुटकी लेते हुए कहा। “आप बहुत थकी हुई लग रही हैं।” वह प्लेट में खाने को सजा रहा था, और उसकी उम्र के हिसाब से उसकी गति धीमी और सजग थी।

“हां, खान चाचा,” श्वेता ने उबासी लेते हुए कहा, उसकी आवाज़ में एक तरह की बेज़ारी थी। “बस, आपने जो किचन नाइफ का प्रयोग करना सिखाया है, उसका एक और एक्सपेरिमेंट कर रही थी।” उसके शब्दों में हलकी सी नीरसता और एक तरह का संतोष था, जैसे वह किसी गहरे खेल का हिस्सा हो, जिसे केवल वह समझ सकती हो।

खान चाचा की आँखों में चुपचाप एक चिंता की लकीर उभर आई। वह सीनियर थे, जीवन के कई रंग देख चुके थे, और श्वेता के हालात को समझने में उसे ज्यादा समय नहीं लगता था। वह कुछ समय के लिए चुप रहे, फिर गंभीरता से श्वेता की ओर देखा, और बोला, "श्वेता बेटा, वैसे तो मैं आपका नौकर हूँ, पर क्या आपने मैडम को सब बता दिया है?" उसकी आवाज़ में एक हलकी सी चिंता और बहुत ही तीव्रता थी, जो श्वेता के जीवन की परतों को उजागर करने की कोशिश कर रही थी।

श्वेता की आँखों में अनजाना छिपा हुआ भय था, लेकिन उसने उसे जल्दी से नकारा और जवाब दिया, " हाँ चाचा। परन्तु पूरी तरह से अभी तक नहीं बताया।"

खान चाचा की आँखों में कुछ और सवाल थे, लेकिन उन्होंने उन्हें अपने तक ही सीमित रखा। उनका अनुभव कहता था कि कुछ बहुत गड़बड़ था, लेकिन श्वेता शायद अभी अपने खेल में इतनी डूब चुकी थी कि वह दूसरों की मदद नहीं ले सकती थी।

"मम्मी, जब तक बाहर नहीं आएंगी, मैं ये खेल खेलती रहूंगी। मेरे दूसरे पापा ने कहा था, ये खेल बड़े लोगों का सबसे पसंदीदा खेल है," श्वेता बड़े ही आत्मविश्वास के साथ बोली। उसकी आवाज़ में एक तरह का मजाक था, लेकिन एक गहरी छुपी हुई नफरत भी थी, जो उसकी हंसी के पीछे छिपी थी।

खान चाचा खाना रख कर चुपचाप वहां से चले गए। वह इस परिवार के साथ ना जाने कितने वर्षों से थे और इस घर को अपने घर तरह से समझते थे। श्वेता की मासूमियत को देख कर वह अक्सर उसे चेतावनी दिया करते थे, लेकिन वह जानते थे कि इस परिवार का असली चेहरा कहीं छिपा हुआ था।

यह एक भरा- पूरा परिवार था, लेकिन श्वेता के असली पिता ने जिस सांप को पाला था, उसका नाम आदर्श था। धीरे-धीरे आदर्श ने अपने सारे चमचों को फार्मा कंपनी में भर लिया, और फिर वह धीरे-धीरे परिवार की धुरी बन गया। सब कहते थे कि श्वेता के पिता एक दुर्घटना में मरे थे, लेकिन खान चाचा को यकीन था कि आदर्श ने उन्हें मारा था। वह जानते थे कि उनके पास इस बारे में कोई ठोस सबूत नहीं था, फिर भी उनका दिल कहता था कि आदर्श ने ही वह खून किया था।

इसके बाद आदर्श ने श्वेता की माँ को शादी के लिए तैयार कर लिया। शादी होते ही उसने अपना असली रूप दिखाना शुरू कर दिया था। पूरी कंपनी को अपने नाम कर लिया था। श्वेता की माँ को वह हर कदम पर पैसों के लिए मोहताज़ कर चुका था। उसका असली खेल तब शुरू हुआ था।

कंपनी के सारे वित्तीय लेन-देन अब केवल आदर्श और उसके चुनिंदा चमचों के हाथ में थे। श्वेता की माँ, जो कभी एक ताकतवर महिला थी, अब खुद को आदर्श की योजनाओं के जाल में फंसा हुआ पाती थी। और श्वेता, जो कभी एक प्यारी बेटी के रूप में पहचानी जाती थी, अब एक गहरी घृणा और बदले की आग से जल रही थी।

श्वेता ने आदर्श से बदला लेने के लिए किचन नाइफ से सब्जियाँ काटने की कला सीखी थी। खान चाचा को पहले समझ में नहीं आया था कि श्वेता को किचन नाइफ में इतनी रुचि क्यों हो रही है। लेकिन जब आदर्श का खून हुआ, तब सब कुछ साफ हो गया। खान चाचा को अब समझ में आ गया था कि श्वेता क्यों किचन नाइफ से इतनी दिलचस्पी ले रही थी। वह एक मासूम लड़की नहीं, बल्कि अपने दर्द और गुस्से को एक खौ़फनाक रूप में बदल चुकी थी।

अब श्वेता हर रात किस शिकार पर जाती थी, यह सवाल खान चाचा के मन में लगातार घूमता रहता था। क्यों वह रात-रात भर घर से बाहर रहती थी? कहीं न कहीं, खान चाचा को अब एहसास हो रहा था कि कुछ तो गड़बड़ था, परंतु वह इस सच्चाई को मानने के लिए तैयार नहीं था। जिस मासूम लड़की को उसने बचपन से पाला-पोसा था, वह अब एक मानसिक रूप से विक्षिप्त किलर बन चुकी थी, जो लोगों को तड़पा-तड़पा कर मारने में आनंद महसूस करती थी। यह सोचकर खान चाचा का दिल टूट सा जाता था, जैसे उसकी पूरी ज़िंदगी एक बड़े धोखे में बसर हो रही हो।

वह उस बच्ची को देखता था, जो कभी उसके लिए एक प्यारी और मासूम बेटी जैसी थी, और अब उसे पहचानने में उसे कठिनाई हो रही थी। वह जानता था कि श्वेता अब वह नहीं रही, जो उसने कभी बनाई थी, लेकिन उस हकीकत को अपने दिल से स्वीकार करना उसके लिए बहुत मुश्किल था। उसकी नज़रों में श्वेता एक हत्या करने वाली दानव बन चुकी थी, लेकिन फिर भी उसके दिल में एक ऐसी गहरी पीड़ा थी, जिसे शब्दों में व्यक्त करना असंभव था।

खान चाचा का मन उसे समझाने और रोकने की कोशिश करता था, लेकिन वह यह भी जानता था कि श्वेता अब उस रास्ते पर चल पड़ी थी, जिसे वापस मोड़ना शायद अब नामुमकिन था। उसकी आत्मा गहरे सवालों से घिरी हुई थी, लेकिन वह अपनी स्थिति में कुछ भी करने की स्थिति में नहीं था। आखिरकार, वह खुद से पूछता था, "क्या मैं उस लड़की को अब भी पहचान सकता हूँ, जिसे मैंने इतना प्यार दिया था?"

श्वेता की माँ जेल में थी। आदर्श के मरने के बाद, उसके चमचों ने हर संभव कोशिश की, लेकिन श्वेता अब बालिग हो चुकी थी, और इसका नतीजा यह हुआ कि उसे ही कंपनी का असली मालिक बना दिया

गया। बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स ने उसे ही चेयरमैन के रूप में स्वीकार कर लिया। श्वेता अपनी माँ से गाइडेंस लेकर कंपनी का संचालन करती थी, और रात को भी अपनी ख़ौफनाक शिकार पर निकल जाती थी।

यह सोचकर दिल में गहरी पीड़ा और घृणा उभर आती थी कि एक मासूम बच्ची को इस हद तक क्रूर और खतरनाक कातिल बनाने वाला वही जालिम आदर्श था। उसकी आत्मा पर यह अपराध इतना बड़ा बोझ था कि खान चाचा कभी-कभी सोचते थे, *"अल्लाह उसकी रूह को इतनी तड़पाए कि कोई भी फिर कभी ऐसा ज़ुल्म करने की सोच भी न सके।"*

इन गहरी और अंधेरी सोचों के बीच, खान चाचा को यह भी एहसास नहीं हुआ कि कब श्वेता ने खाना खा लिया, कब वह तैयार हुई और घर से निकल गई। जैसे ही वह किचन में पहुंचा, खान चाचा ने देखा कि श्वेता एक-दो नये धारदार नाइफ अपनी सलवार में छिपा कर ले जा रही थी। यह संकेत था कि वह आज रात फिर से अपनी ख़ौफनाक योजना को अंजाम देने जा रही थी।

जो खेल वह खेल रही थी, उसका परिणाम बहुत ही भयावह होने वाला था। अगर उसे रोकने की कोशिश न की गई, तो शायद पूरे शहर के लिए एक ऐसा दंश छोड़ जाएगी, जिसे कोई भी कभी भूल नहीं सकेगा।

* ϕ *

प्रद्युम्न अपनी कुर्सी पर आराम से बैठा था, और फॉरेंसिक टीम की ड्राफ्ट रिपोर्ट को गहराई से पढ़ रहा था। रिपोर्ट पूरी नहीं थी, क्योंकि फॉरेंसिक विशेषज्ञ अभी भी अपनी जांच कर रहे थे, लेकिन कल रात हुई क्रूर हत्याओं का एक प्रारंभिक ड्राफ्ट प्रद्युम्न को दे दिया गया था। रिपोर्ट

को ध्यान से पढ़ते हुए, वह क्राइम सीन को अपनी आँखों के सामने जीवित करने की कोशिश कर रहा था।

उसने कल्पना की कि एक जवान लड़की किसी आदमी को अपनी मोहब्बत में फंसा लेती है, और वह उसे अपने घर में शरण देने के लिए तैयार हो जाता है। फिर, उस लड़की ने एक सुनहरे मौके का लाभ उठाते हुए, बेंज़ोडायजेपाइन (Benzodia zepine), जो एक शक्तिशाली नशीला पदार्थ था, का कंसंट्रेटेड स्प्रे उस दंपति के चेहरे पर छिड़क दिया। कुछ ही सेकंड्स में दोनों का दिमाग सुन्न पड़ गया। लड़की ने चुपके से उनके घर से एक धारदार किचन नाइफ लिया और पहले महिला का गला रेतकर उसकी हत्या कर दी।

लेकिन यह कहानी यहीं खत्म नहीं हुई। लड़की की खूबसूरती इतनी प्रभावशाली थी कि महिला की हत्या के बाद भी, उस आदमी ने उसे अपने पास बुलाया। पत्नी की लाश के बावजूद, वह उस लड़की के साथ रात बिताना चाहता था। उसकी हवस इतनी मजबूत थी कि उसने खुद को पूरी तरह से नग्न कर लिया। और उसी पल, उस लड़की ने एक और खौ़फनाक कदम उठाया—उसने किचन नाइफ से उसकी भी हत्या कर दी। यह सब इतनी बर्बरता से हुआ कि यह स्पष्ट था कि वह लड़की इस प्रक्रिया को किसी खौ़फनाक खेल की तरह एन्जॉय कर रही थी।

प्रद्युम्न की आँखों में चमक आ गई। वह इस मामले के बारे में और भी गहरी सोच में डूब गया, क्योंकि वह जानता था कि जो कुछ भी हुआ था, वह कोई साधारण हत्या नहीं थी—यह एक जटिल, सायकोलॉजिकल खेल था। उसे अब पूरा यकीन था कि जो कातिल था, वह बहुत ही खतरनाक था और उसके पीछे एक गहरी मानसिकता थी, जो सिर्फ हत्या करने का उद्देश्य नहीं था, बल्कि इससे कुछ और हासिल करने का था।

तभी प्रद्युम्न ने उस फाइल में देखा और उसके हाथों से रिपोर्ट के कागज फिसलते-फिसलते रुक गए। उसकी आँखों ने देखा कि वह बेंज़ोडायजेपाइन (Benzodiazepine) ड्रग न्यूरॉन फार्मा कंपनी की थी, और यह देखकर उसे एक ख्याल आया। वह विचार में डूब गया, क्योंकि यह जानकारी कुछ और ही संदर्भ से जुड़ी हुई थी।

आश्चर्य की बात यह थी कि न्यूरॉन फार्मा कंपनी के मालिक आदर्श की हत्या भी ठीक इसी तरीके से हुई थी। पहले उसे बेंज़ोडायजेपाइन दी गई थी, फिर उसकी लाश को किचन नाइफ से बेरहमी से काटा गया था। उसकी लाश भी नग्न अवस्था में मिली थी, बिल्कुल उसी तरह जैसे कि इस हालिया हत्याकांड में हुआ था। प्रद्युम्न के मन में एक सवाल उठा: "क्या यह सब उसी कातिल का काम है? क्या आदर्श की पत्नी का हाथ है इसमें?"

लेकिन फिर उसे याद आया कि आदर्श की पत्नी तो जेल में है। *"नहीं, यह कैसे हो सकता है?"* प्रद्युम्न ने खुद से कहा। हालाँकि, श्वेता की माँ ने कभी भी यह स्पष्ट नहीं किया कि उसने अपने दूसरे पति को इतनी वीभत्स मौत क्यों दी थी।

इन्हीं विचारों में गहरे डूबे प्रद्युम्न को कमल का आवाज़ सुनाई दी, और वह चौंकते हुए खड़ा हो गया।

"सर, मैंने मीडिया को स्टेटमेंट दे दिया है। जल्द ही वह लड़की मुझ पर कुछ एक्शन लेगी, और मैं उसे पकड़ लूंगा।"

प्रद्युम्न ने बिना अपनी नजरें कागजों से हटाए पूछा, "कमल, तुम्हें लगता है इससे लोग सच में सावधान होंगे, और वह लड़की तुम पर हमला करेगी?"

कमल ने आत्मविश्वास से जवाब दिया, "सर, यदि वह लड़की एक साइकोलॉजिकल बीमारी से ग्रस्त है, तो शायद वह मुझ पर हमला जरूर करेगी।"

प्रद्युम्न की आँखों में चिंगारी सी लहराई। "और फिर तुम उसे पकड़ लोगे?"

"बिलकुल, सर," कमल ने ठान लिया था।

"पकड़ भी लिया तो क्या होगा?" प्रद्युम्न ने फिर एक गहरी सांस ली और सिर झुका लिया।

कमल थोड़ा चकराया, "मैं समझा नहीं, सर।"

प्रद्युम्न ने उसकी आँखों में गहरी नजरें डालीं और कहा, "तुमने सेक्शन 84 आईपीसी (IPC) नहीं पढ़ा है?"

कमल को समझते देर न लगी कि प्रद्युम्न उसे किसी गहरी और महत्वपूर्ण बात की ओर इशारा कर रहा था। वह चिंतित हुआ, क्योंकि वह जानता था कि यदि वह लड़की मानसिक रूप से असंतुलित है, तो वह कानून के अनुसार "संवेदनशील" मान्य हो सकती है, और इसके परिणामस्वरूप उसे कोई सजा नहीं मिल सकती। लेकिन क्या ऐसा हो सकता था?

"सर, वो कोर्ट का काम है। अगर कोर्ट उस लड़की को पागल मानता है और सेक्शन 84 आईपीसी के तहत उसे क़त्ल का दोषी नहीं ठहराता, तो क्या हुआ? उसे इलाज के लिए तो भेजा ही जाएगा। और फिर, अगर इलाज के बाद वो कातिल ठीक हो जाती है, तो भी हमारा काम पूरा हो जाएगा, न?" कमल ने प्रद्युम्न से कहा।

प्रद्युम्न कुछ पल के लिए चुप रहा और फिर उसकी आँखें गहरी सोच में डूब गईं। "हाँ, तुम ठीक कह रहे हो। वैसे, मुझे एक और क्लू मिला है।"

"क्या सर?" कमल ने उत्सुकता से पूछा।

"पर कमल, अभी वह इतना कच्चा है कि मैं तुम्हें बताना नहीं चाहता। मुझे थोड़ा और समय दो, फिर बताऊँगा," प्रद्युम्न ने कहा, सोचते हुए कि न्यूरॉन फार्मा कंपनी वाली बात अभी कमल को बताना ठीक नहीं होगा। यह भी हो सकता था कि यह महज़ एक इत्तिफाक हो।

"कोई बात नहीं सर, जब आप चाहें तब बता देना। अब रात हो चुकी है, और मैं उम्मीद करता हूँ कि वो पागल लड़की शायद मुझे ढूँढते हुए आ जाए।"

"क्यों, तुमने अपनी पूरी आइटिनेररी उसे बता दी?" प्रद्युम्न ने हैरान होते हुए पूछा।

"हाँ सर, मैंने मीडिया में जो स्टेटमेंट दिया है, उसमें उसे खुला चैलेंज दिया है। मैंने ये भी कह दिया है कि वैसे तो मैं पुलिस क्वार्टर्स में रहता हूँ, लेकिन अगले पूरे हफ्ते अपने एक दोस्त के घर नई झालाना कॉलोनी में रहूँगा। वो वैसे भी उस इलाके से वाकिफ है।"

"तुमने तो सर पर कफ़न बाँध लिया है," प्रद्युम्न हंसते हुए बोला।

"हाहा, हाँ सर। वो कातिल मिल जाए तो और क्या चाहिए?" कमल ने मजाक में कहा।

"ठीक है। पर सावधान रहना।"

"जरूर सर," कमल ने विश्वास के साथ कहा।

"वैसे, ये दंपत्ति करुण शर्मा और उसकी पत्नी अलका के बारे में उनके घरवालों को खबर कर दी है?"

"हाँ सर, उनके कोई औलाद नहीं थी। उनके बाकी घरवाले गाँव में हैं, उनको खबर पहुँच गई है। करुण न्यूरॉन फार्मा में काम करता था और अलका हाउस वाइफ थी।"

"क्या न्यूरॉन फार्मा?" प्रद्युम्न अनायास ही बोल पड़ा।

"हाँ सर, क्यों?" कमल ने सवाल किया।

"नहीं, बस ऐसे ही। कुछ..." प्रद्युम्न कुछ कहने वाला था, लेकिन कमल ने उसकी बात बीच में काट दी।

"सर, मैं आपका क्लू समझ गया हूँ।"

"क्या कमल?"

"आपको ये लग रहा है कि न्यूरॉन फार्मा के मालिक आदर्श की मौत भी बिल्कुल उसी तरीके से हुई थी जैसे करुण शर्मा की। उसकी भी नग्न लाश को किचन नाइफ से बुरी तरह भेदा गया था।"

"हां। मुझे पता है कि उसकी पत्नी ने तुरंत ही पुलिस को सरेंडर भी कर दिया था।"

"सर, वो जेल में ही है, बेल पर बाहर नहीं आई है। और ना ही वो ऐसी पागल है कि रास्ते चलते लोगों का क़त्ल करेगी। उसने अपने पति का खून क्यों किया, ये अभी तक एक पहेली है, लेकिन ये कहना कि वो ही ये खून कर रही है... सर, ये कुछ थोड़ा ज्यादा हो गया।"

"हाँ, ठीक है, कमल। बस, अनायास ही सोच लिया, मैंने कहा था न, मेरा क्लू कच्चा है।"

"कोई बात नहीं सर," कमल ने प्रद्युम्न को सलूट मारा और उसके केबिन से बाहर निकल गया। वैसे भी अब धीरे-धीरे रात होने को चली थी।

प्रद्युम्न अपने विचारों में खो गया था। "इतना ज्यादा संयोग कैसे हो सकता है?" उसने सोचा। आदर्श की हत्या और करुण शर्मा की हत्या में एकदम वही तरीका—क्या यह महज़ इत्तिफाक था? अगर रमेश की लाश को देखा जाए, तो केवल बेंज़ोडायजेपाइन (Benzodiazepine) का प्रयोग ही एकमात्र फर्क था। और, एक और कनेक्शन—करुण शर्मा भी न्यूरॉन फार्मा में काम करता था। प्रद्युम्न को अब यह समझ में आ रहा था कि क्या हो सकता था।

वह फिर से रमेश की फाइल देखने लगा। उसकी आँखों में ताज्जुब का एक और मंजर था। रमेश भी न्यूरॉन फार्मा में काम करता था! यह क्या माज़रा था?

"इसका मतलब," प्रद्युम्न ने धीरे-धीरे सोचा, "कातिल सिर्फ मिडल क्लास पुरुषों को नहीं, बल्कि उन लोगों को भी मार रही है, जिनका कनेक्शन न्यूरॉन फार्मा से था। वह पहले इन लोगों की जानकारी फार्मा कंपनी के सिस्टम से निकालती है, फिर उन्हें अपने हुस्न के जाल में फंसा कर उनका क़त्ल कर देती है।"

लेकिन, प्रद्युम्न का दिमाग अब यह सवाल कर रहा था, "उसे ये डिटेल्स कहाँ से मिलती थीं?" क्या यह कातिल आदर्श की पत्नी ही थी, जिसने सभी की जान ली? क्या उसने अपनी जानबूझकर पति की हत्या का इल्ज़ाम अपने सिर ले लिया था, ताकि किसी और हत्या का उसे कोई दोषी ना ठहराए?

प्रद्युम्न की आँखों में एक तीव्र नजर उभरी—वह कुछ ऐसा ढूंढ चुका था जो उसे कातिल तक ले जाएगा। कमल भी अपने तरीके से प्रयास कर रहा था। लेकिन, अब यह सवाल था कि इनमें से कौन असली कातिल तक पहुँचने में सफल होगा? समय ही बताएगा।

*** ϕ ***

श्वेता अपने आलीशान ऑफिस के केबिन में बैठी हुई थी, जहां हर दीवार पर उसके असली पिता जय कपाड़िया और सौतेले पिता आदर्श की तस्वीरें सजी हुई थीं। यह केबिन शानदार था, लेकिन श्वेता के लिए यह एक ऐसा स्थान था जहाँ वह अपने भीतर की दुनिया को छिपा सकती थी। वह बहुत कम अपने ऑफिस आती थी और सोशल मीडिया पर भी अपनी उपस्थिति से दूर रहती थी। वह एक बेहद खूबसूरत लड़की

थी, लेकिन इसके बावजूद उसने अकेले रहकर अपने जीवन को जीने की राह चुनी थी, जैसे वह बाहरी दुनिया से खुद को काट चुकी थी।

आज वह अपने कंपनी के वित्तीय दस्तावेज़ों की जांच कर रही थी। न्यूरॉन फार्मा की सीईओ के तौर पर श्वेता ने कंपनी के सारे एकाउंट्स को पूरी तरह से समझ लिया था। उसके दोनों पिता की हत्याओं के बाद, बोर्ड ऑफ़ डायरेक्टर्स के बीच हलचल थी। वे समझ नहीं पा रहे थे कि कंपनी का अगला कदम क्या होना चाहिए। न्यूरॉन फार्मा को जय कपाड़िया ने खड़ा किया था, जो एक छोटी सी मेडिसिन की शॉप से हिंदुस्तान की सबसे बड़ी फार्मा कंपनी में से एक बना चुके थे। उनकी पत्नी मलाइका ने जय के साथ मिलकर कंपनी में एक अहम स्थान हासिल किया था, हालांकि वह उतनी बड़ी जीनियस नहीं थीं, लेकिन एकाउंट्स और वित्तीय मामलों की समझ में माहिर थीं।

श्वेता ने अपनी माँ से भी वित्तीय मामलों की शिक्षा ली थी और अब वह पूरी तरह से कंपनी के दस्तावेज़ों और फाइनेंशियल ट्रांजेक्शंस को समझने में सक्षम थी। दोनों पिता की हत्याओं और उसकी माँ के जेल जाने के बाद, बोर्ड ऑफ़ डायरेक्टर्स ने श्वेता को सीईओ बनाने का निर्णय लिया था। कंपनी में किसी बाहरी व्यक्ति को यह जिम्मेदारी देने के बजाय, श्वेता ही उस पद की योग्य समझी गई थी। आदर्श, जो एक बाहरी व्यक्ति था, शायद सीईओ बन सकता था, लेकिन उसकी अचानक मौत के बाद बोर्ड ने यह फैसला लिया कि श्वेता ही इसका नेतृत्व करेगी।

इस निर्णय को सभी कर्मचारियों ने स्वीकार कर लिया था, लेकिन श्वेता आज भी अपने एम्प्लाइज के लिए एक पहेली बनी हुई थी। वह बहुत कम लोगों से इंटरैक्ट करती थी और शायद ही कोई कर्मचारी

उसे अच्छी तरह से जानता था। उसकी उपस्थिति में एक रहस्य था, एक अदृश्य दीवार, जो उसे हर किसी से अलग करती थी।

रात के आठ बजे थे और श्वेता अपने ऑफिस में अकेली बैठी थी। वह पहले से ही जानती थी कि ऑफिस में कुछ गड़बड़ है, और उसका गुस्सा साफ़ नजर आ रहा था। उसने अपने HR हेड को फोन किया, "ये हमारी कंपनी का आईपीओ कल आ रहा है और ऑफिस आज खाली क्यों है? लोग काम क्यों नहीं कर रहे?"

HR हेड, जो एक पचास वर्षीय पुरुष था, सकपका गया, "मैडम, सेक्रेटेरियल डिपार्टमेंट तो काम कर रहा है।"

श्वेता की आवाज़ में खीझ थी, "क्या बकवास कर रहे हो? मैं ऑफिस में हूँ, और हमारी कॉर्पोरेट कम्युनिकेशन हेड देविका कहाँ है?"

इस सवाल ने HR हेड को चौंका दिया। उसे कभी भी यह एहसास नहीं हुआ था कि श्वेता कंपनी के बारे में इतनी गहरी जानकारी रखती है। "मैं चेक करता हूँ, मैम," उसने कहा और फोन रख दिया।

श्वेता को अच्छी तरह से पता था कि देविका आदर्श के साथ बहुत घूमती थी, और यह बात पूरी कंपनी में मशहूर थी। देविका को इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता था, क्योंकि उसकी नौकरी ठीक चल रही थी। आदर्श की मौत के बाद, वह थोड़ी उदास और हताश हो गई थी, लेकिन शायद अब देविका को श्वेता का एक ऐसा रूप देखना था, जिसकी उसने कभी कल्पना भी नहीं की थी।

श्वेता का गुस्सा अब तेज़ हो चुका था, क्योंकि वह जानती थी कि देविका और आदर्श के बीच कुछ और भी था, और उसे अब इस बात का जवाब चाहिए था।

ϕ

एपिसोड चार - निर्दोष हत्या

देविका पूरी तरह से तैयार थी, एकदम खूबसूरत, और आज रात उसे अपनी पसंदीदा जगह पर जाने का पूरा मन था—उस बड़े और पॉश पब में, जहाँ हर पल कुछ खास होता था। वह अपनी पसंदीदा ड्रेस में लहराते हुए पब की ओर बढ़ रही थी, लेकिन तभी उसका फोन बज उठा। स्क्रीन पर प्रियंका का नाम देखकर देविका ने मन ही मन उसे कोसा, और फिर फोन उठा लिया।

"बोलो," देविका ने थोड़ी खीझ के साथ कहा।

प्रियंका की आवाज़ थोड़ी चिंतित थी, "देविका, तुम यार, आज फिर काम अधूरा छोड़ कर चली गयी।"

देविका ने गहरी सांस ली, "प्रियंका, रिलैक्स यार, आज मेरा बर्थडे है।"

प्रियंका ने हल्की नाराजगी से कहा, "देविका, तुम इतना लापरवाह कैसे हो सकती हो? तुम्हे पता है, कल न्यूरॉन फार्मा का आईपीओ आने वाला है। हमारी कंपनी के लिए इतना बड़ा दिन है, और तुम... तुम तो ऐसे ही छुट्टी ले रही हो। और हमारी प्रोमोटर फैमिली भी मुझसे फॉलो-अप कर रही है।"

देविका ने हंसी के साथ कहा, "यार प्रियंका, क्या झूठ बोलती हो तुम? अब कौन बचा है प्रमोटर फैमिली में? पत्नी तो जेल में है, पति ऊपर चला गया, और उस पगली लड़की श्वेता को तो आईपीओ की फुलफॉर्म भी नहीं पता। छोड़ यार, लेट मी एन्जॉय माय डे (Let me enjoy my day). तू देख ले, जब चाहें फॉलो-अप कर लेना।"

देविका ने बात पूरी करते हुए फोन काट दिया, एक हल्के से मुस्कान के साथ, जैसे किसी ने कोई मजेदार बात कही हो और उसे अब ज्यादा नहीं सुनना था। वह पूरी तरह से अपने बर्थडे के मूड में थी और प्रियंका की बातें उसकी खुशी में कोई खलल नहीं डाल सकती थीं।

देविका, वैसे भी आदर्श की एक्स-गर्लफ्रेंड के रूप में जानी जाती थी। आदर्श के साथ उसका रिश्ता कुछ खास था, और लोग इसे काफी समय तक लेकर चर्चा करते रहे। जब तक आदर्श ने मलाइका से शादी नहीं की थी, देविका ही थी जो आदर्श का स्थायी साथी थी। दोनों अक्सर साथ घूमते थे, रातें बिताते थे, और शहर के कई शानदार स्थलों पर साथ दिखाई देते थे। लेकिन जैसे ही आदर्श ने मलाइका से शादी की, उसका देविका के प्रति रुचि ख़त्म हो गई।

हालाँकि, कुछ लोग ये भी कहते थे कि आदर्श की शादी के बाद भी देविका और आदर्श का रिश्ता कभी पूरी तरह खत्म नहीं हुआ था। ऐसा कहा जाता था कि कई बार देविका आदर्श के घर में मलाइका के बैडरूम में भी सोई थी, और मलाइका इस बात से अंजान थी या शायद वह नजरअंदाज करती थी। लेकिन आदर्श की मौत के बाद, देविका को अपना जीवन फिर से चलाने के लिए न्यूरॉन फार्मा में काम करना पड़ता था। उसके मजे के दिन ख़तम हो गए थे। आदर्श के समय वो न्यूरॉन फार्मा से फ्री में तनख्वाह उठती थी, परन्तु अब प्रियंका देविका से निचोड़ कर काम लेती थी।

देविका प्रियंका को बिल्कुल भी पसंद नहीं करती थी। प्रियंका, जो अब उसके बॉस के रूप में उभर चुकी थी, देविका के लिए हमेशा एक बाधा ही रही थी। प्रियंका के आदेशों और उसकी कड़ी निगरानी से देविका का मूड हमेशा ही खराब रहता था।

लेकिन आज देविका ने ठान लिया था कि वह किसी भी बात को अपने बर्थडे की खुशी के रास्ते में नहीं आने देगी। उसने मन ही मन सभी चिंताओं को किनारे करते हुए, अपने पसंदीदा पब की ओर रुख किया। उसे लगा, यह दिन सिर्फ उसका है और वह इस दिन का पूरा आनंद उठाएगी, भले ही किसी के लिए वह आदर्श की एक्स-गर्लफ्रेंड थी, या फिर प्रियंका के लिए एक असहज सहकर्मी।

कुछ ही देर में देविका का करंट बॉयफ्रेंड विशाल पब में आ गया। वह दोनों काफी देर तक वहां आनंद लेते रहे, और कब रात के बारह बज गए, उन्हें पता ही नहीं चला। देविका का मूड अच्छा था, और वह खुशी से अपने बर्थडे के केक काटने का इंतजार कर रही थी। मगर विशाल का अभी तक लौटकर आना नहीं हुआ था, वह वाशरूम गया था, और दस मिनट से ज्यादा वक्त हो गया था। देविका को इस बात का अंदाजा नहीं था कि विशाल को जेंट्स बाथरूम के बाहर एक खूबसूरत, दूधिया लड़की मिली थी।

"मुझे तुमसे एक हेल्प चाहिए," श्वेता ने विशाल के कंधे पर हल्के से हाथ रखते हुए कहा।

विशाल ने कभी इतनी सुंदर लड़की नहीं देखी थी। वह लगभग पैंतीस साल का था, और देविका उससे एक- दो साल बड़ी थी, लेकिन जो लड़की उसके सामने खड़ी थी, वह लगभग बीस साल की दिखती थी। उसकी सुंदरता उस पब में ही नहीं, पूरे शहर में एक मिसाल बन सकती थी।

"बोलो," विशाल ने कुछ हद तक चकित होते हुए कहा, उसकी आवाज में उत्सुकता साफ झलक रही थी।

"मेरा बॉयफ्रेंड मुझे छोड़कर चला गया है, मुझे मेरे घर छोड़ दो प्लीज," श्वेता ने मोहक अंदाज में कहा और विशाल के पास झुकते हुए

गिर पड़ी। विशाल को लगा कि शायद लड़की ने ज्यादा शराब पी रखी है, लेकिन उसका रूप उसे मंत्रमुग्ध कर गया था।

"ठीक है, मैं अपनी गर्लफ्रेंड को बोल कर आता हूँ," विशाल ने कहा, लेकिन श्वेता ने अचानक जोर से उसका हाथ पकड़ लिया।

"नहीं!" श्वेता ने चीखते हुए कहा, "तुम भी मुझे डिच करना चाहते हो? तुम सब मर्द एक जैसे ही होते हो," श्वेता ने उग्र होते हुए हाथ से उसे दूर धकेलने की कोशिश की और लड़खड़ाती हुई कदमों से वहां से जाने की कोशिश करने लगी।

विशाल ने उसका हाथ मजबूती से पकड़ लिया और उसे अपने पास खींच लिया। "नहीं, मैं तुम्हें डिच नहीं करूँगा," विशाल ने कहा और श्वेता को हल्के से गले लगा लिया। श्वेता का कोमल बदन और उसकी मीठी खुशबू ने विशाल को इतना प्रभावित किया कि वह पूरी तरह से मंत्रमुग्ध हो चुका था, जैसे वह किसी और दुनिया में खो गया हो।

विशाल ने श्वेता को सहारा देते हुए पब से बाहर ले जाना शुरू किया। श्वेता ने मोहक अंदाज में कहा, "तुम क्या मुझे गोद में नहीं उठा सकते?"

विशाल की बांछें खिल गईं। श्वेता की मांग पर उसे कोई आपत्ति नहीं थी। "ज़रूर," उसने बिना किसी हिचकिचाहट के श्वेता को अपनी गोद में उठा लिया और उसे पब से बाहर ले गया। पब के अंदर अन्य कपल्स को यह दृश्य इतना रोमांटिक लगा कि वे जोर-जोर से सीटी बजाने लगे। देविका की नज़र भी अचानक श्वेता और विशाल पर पड़ गई। देविका की आंखों में गुस्से की लाली छा गई, और वह चुपचाप खड़ी यह दृश्य देख रही थी, जिस पर उसे कोई अंदाजा नहीं था।

देविका, जो अपने बर्थडे पर कुछ अलग किस्म का अनुभव चाहती थी, इस अप्रत्याशित घटनाक्रम से चौंक गई थी। गुस्से और हताशा के साथ,

वह भीड़ को चीरते हुए विशाल और श्वेता के पीछे-पीछे चलने लगी। "विशाल!" देविका ने चीखते हुए पुकारा, लेकिन विशाल ने शायद उसकी आवाज़ सुनी ही नहीं, या फिर उसने अनसुना कर दिया। वह श्वेता को लेकर जल्दी से बाहर निकल गया । देविका ने उसका पीछा किया, लेकिन विशाल किस लड़की को गोद में उठाए वहां से भाग गया, यह वह देख नहीं पाई। देविका का बर्थडे जिस तरह से बीतने वाला था, उसने कभी भी इस तरह के मोड़ की कल्पना नहीं की थी। उसे यह सब इतना अव्यवस्थित और अनियोजित लगा कि वह सोचने लगी, शायद प्रियंका के साथ कंपनी का काम कर रही होती तो ज्यादा बेहतर होता। अब उसके मन से सारा नशा उतर चुका था।

विशाल ने श्वेता को अपनी गोद में उठाया और पब से बाहर की ओर बढ़ने लगा। उसकी कदमों में तेज़ी थी, जैसे वह समय बर्बाद नहीं करना चाहता था। श्वेता ने अपनी नजरें झुका कर, थोड़ी सहमी हुई, लेकिन उतनी ही मोहक मुस्कान के साथ विशाल को देखा। पब के बाहर पहुंचते ही विशाल ने श्वेता को अपनी गोद में लिए लिए गाड़ी की ओर बढ़ गया, जो पहले से ही वहाँ खड़ी थी।

विशाल ने गाड़ी का दरवाजा खोला और श्वेता को अंदर बैठने के लिए सहारा दिया। श्वेता ने उसे धन्यवाद कहा और गाड़ी में बेतकल्लुफ़ अंदाज में बैठ गई। विशाल ने फौरन दरवाजा बंद किया और गाड़ी की रफ्तार बढ़ा दी, जैसे वह पब की भीड़ और शोर-शराबे से जल्दी निकल जाना चाहता हो।

गाड़ी की गति तेज़ हो गई, और शहर की रोशनियों के बीच वह दोनों एक अजनबी रास्ते पर आगे बढ़ते गए। श्वेता के हल्के-हल्के हंसी के स्वर और विशाल की घबराहट भरी साँसें वातावरण को और भी रहस्यमय बना रही थीं। श्वेता की खूबसूरती और उसकी उपस्थिति ने विशाल को जैसे

जादू में बांध लिया था। उसकी नजरें कभी श्वेता के चेहरे पर, तो कभी उसके कोमल हाथों पर जातीं, और वह खुद को पूरी तरह से इस नजारे में खो चुका था।

विशाल को यह एहसास नहीं था कि उसने क्या किया, लेकिन उसे उस पल में कोई और दुनिया दिखाई नहीं दे रही थी। उसके दिमाग में श्वेता के बारे में सोचना ही एकमात्र विचार था, और यह उसे लग रहा था जैसे वह अपनी पूरी जिंदगी की सबसे रोमांचक यात्रा पर निकल चुका हो।

विशाल ने थोड़ी देर बाद श्वेता से पूछा “आपका घर कहाँ है“

“हाहा। तुम मुझे अच्छे लगे।“ श्वेता थोड़ा हस्ते हुए बोली।

“ऐसा करो यही कही रोक दो। थोड़ा टाइम तुम्हारे साथ बिताया जाये।“ श्वेता ने बहुत ही मनमोहक अंदाज़ में बोला।

“ठीक है।“ विशाल ने गाड़ी रोक दी। वो श्वेता के रूप के माया जाल में पूरी तरह फस चूका था।

एक बेहद खूबसूरत लड़की जो टॉप और मिनी स्कर्ट पहने हुए थी, ऐसी दिखती थी जैसे चांदनी रात में चमकता हुआ चांद। उसका टॉप चुस्त और फिट था, जो उसकी कमर की पतली रेखाओं को उभारता था और उसकी कमर के आसपास एक सुखद वक्र बनाता था। टॉप का रंग उसकी त्वचा के साथ मेल खाता था, जिससे उसकी सुंदरता और भी निखर कर आती था।

मिनी स्कर्ट उसके पैरों की लंबाई और स्लिमनेस को उजागर करती थे, जो हवा में हल्की सी चलने पर थिरकती हुई लगती थी। स्कर्ट का डिज़ाइन साधारण था, लेकिन उसके ऊपर का प्रभाव अद्भुत था - यह उसकी आत्मविश्वास और शैली को दर्शाता था। उसके बाल खुले हुए थे, जो हवा में लहराते हुए उसके चेहरे की सुंदरता को और भी सुंदर बनाते थे।

उसकी आँखें, जो गहरी और मोहक हैं, जैसे किसी को अपनी ओर खींच लेती थी।

उसकी मुस्कान ऐसी थी जो दिल को छू लेती थी, और जब वह हंसती थी तो उसका चेहरा और भी ज्यादा चमक उठता था। उसकी स्टाइलिश हील्स उसके कद को और भी लंबा दिखाती थी, और उसके चलने के अंदाज में एक ऐसी सहजता है जो उसे और भी आकर्षक बनाती थी। उसका पूरा व्यक्तित्व एक सुंदर कलाकृति की तरह था, जो किसी अति तपस्वी का भी ध्यान आकर्षित कर सकती थी, मामूली पुरुषों की तो औकात ही क्या थी।

ASI कमल ने ये चेतावनी दे दी थी कोई भी किसी लड़की की मदद न करे और पुलिस को तुरंत ऐसी लड़की के बारे में बता दिया जाए। विशाल ने शायद वो चेतावनी सुनी तो थी परन्तु श्वेता की सुंदरता के मोह में शायद उसने उस चेतावनी को नज़रअंदाज कर दिया।

"वो तुम्हारी गर्ल फ्रेंड थी " श्वेता ने थोड़ी सख्त आवाज़ में पूछा।

"हाँ "

"तुम्हे वो पसंद है या मैं "

"मैं तुम्हारे साथ यहां हूँ उसका बर्थडे छोड़ कर तो तुम सोच ही सकती हो "

"ठीक है। तो उसे यहाँ बुलाओ और मेरे सामने ब्रेक अप करो।"

"ये क्या बोल रही हो तुम।"

"हाँ। यदि मेरे सामने तुमने उसके साथ ब्रेक अप कर लिया तो मैं तुम्हारे घर चलने को तैयार हूँ और एक पूरी रात तुम्हारे इशारो पर नाचूंगी। जो तुम कहोगे जैसा तुम कहोगे वैसा करुँगी " श्वेता ने अति मोहक अंदाज़ में कहा।

विशाल ने नज़र भर फिर श्वेता को देखा। टॉप और मिनी स्कर्ट जैसी उस सिंपल सी ड्रेस में भी वो किसी अप्सरा से कम नहीं लग रही थी।

विशाल ने बिना एक पल गवाएं देविका को फोन कर दिया। “कहाँ हो तुम। “ देविका ने सख्त लहजे में कहा।

“अरे डार्लिंग तुम्हारे लिए एक सरप्राइज प्लान किया है। लोकेशन भेज रहा हूँ वहां आ जाओ। पब में वो सरप्राइज पूरा नहीं होता “ विशाल ने जल्दी जल्दी कहा और फोन काट दिया। उसने अपनी लोकेशन देविका को भेज दी।

श्वेता वैसे पूरा नशे में होने का नाटक कर रही थी हालाँकि वो सब कुछ नोट कर रही थी।

विशाल श्वेता के पास आया और उसे किस करने की कोशिश करने लगा। श्वेता ने अपनी एक ऊँगली उन दोनों के होठो के बीच में लगा दी। “पहले ब्रेक अप”

“वो तो मैं कर लूंगा “

“तो उसके बाद जो तुम कहो”

“ठीक है। “

विशाल अपनी गाड़ी की ड्राइविंग सीट पर बैठ गया, जबकि श्वेता उसके साथ वाली सीट पर, उसके करीब ही, स्थित थी। कुछ ही पलों में देविका वहाँ पहुँच गई।

"अपना मोबाइल मुझे दे दो, अपनी गर्लफ्रेंड को दो चांटे मारो और उससे ब्रेकअप कर लो," श्वेता ने अपने मोहक लेकिन आदेशात्मक स्वर में कहा।

"चांटा?"

"हाँ, और इतनी जोर से कि उसकी आवाज मुझे यहाँ साफ-साफ सुनाई दे।"

विशाल ने सहमति में सिर हिलाया। उसने अपना मोबाइल अनलॉक किया और श्वेता को सौंप दिया। फिर विशाल अपनी गाड़ी से उतरा और देविका की गाड़ी के पास पहुँचा। देविका ने उसे देखते ही अपनी गाड़ी से बाहर कदम रखा।

"क्या सरप्राइज है?"

बिना कोई शब्द बोले, विशाल ने देविका को एक जोरदार चांटा लगाया। देविका हैरान रह गई। "विशाल!" वह चिल्लाई। लेकिन इससे पहले कि वह और कुछ कह पाती, विशाल ने उसे एक और कसा हुआ चांटा मारा और कहा, "मैं तेरे से ब्रेकअप कर रहा हूँ।"

देविका शॉक में थी, उसकी दुनिया एक पल में ही पलट गई थी। उसे लगा था कि विशाल उसका लाइफ पार्टनर बन जाएगा। विशाल ने आगे कहा, "तू वैसे भी सेकंड हैंड माल है, आदर्श का छोड़ा हुआ झूठा।" उसने फिर देविका को एक और चांटा मारा और अपनी गाड़ी की ओर वापस चला गया।

"क्या बात है, तुम तो कमाल हो," श्वेता ने विशाल की तारीफ की। उसने विशाल के मोबाइल से सारी घटना रिकॉर्ड कर ली थी और वो रिकॉर्डिंग देविका को व्हाट्सएप पर भी भेज दी थी। मैसेज में लिखा था, "योर बर्थडे गिफ्ट।"

विशाल श्वेता को देख रहा था - उसने अब तक ऐसी खूबसूरत लड़की नहीं देखी थी।

"चलो, तुमने अपना काम बखूबी किया है। अब तुम्हारे घर चलते हैं। तुम्हें गिफ्ट भी तो देना है," श्वेता ने मोहक अंदाज में कहा।

विशाल की खुशी का ठिकाना नहीं था। वह इंतजार नहीं कर सकता था और फौरन श्वेता को अपने घर के अंदर ले गया। यह एक मल्टी-

स्टोरी अपार्टमेंट था। श्वेता को समझ आ गया था कि यहाँ जरूर कोई सीसीटीवी होगा और वॉचमैन भी उसे देख सकता था।

इससे पहले कि विशाल गाड़ी को अपार्टमेंट के अंदर ले जाता, श्वेता बोली, "मुझे तुम्हारा जैकेट दो।"

विशाल को इसका मतलब समझ नहीं आया। उसने अपना जैकेट उसे दे दिया। श्वेता ने उस जैकेट से अपना चेहरा ढक लिया। विशाल के साथ, वह अपार्टमेंट के बेसमेंट में चली गई। लिफ्ट में भी वह अपने चेहरे को ढके हुए थी। विशाल ने पूछा, "अपना चेहरा क्यों छुपा रही हो?"

"डियर, गर्ल्स अपने आप को एक्सपोज नहीं कर सकतीं। यहाँ बहुत सी सीसीटीवी हैं और मैं नहीं चाहती कि मैं उनमें पकड़ी जाऊं।"

विशाल ने श्वेता की कोहनी को हल्के से छुआ। जल्दी ही वे दोनों उसके अपार्टमेंट के अंदर थे। श्वेता ने यह सुनिश्चित किया कि विशाल के घर में कोई भी कैमरा नहीं था।

"तुम यार बहुत ज्यादा घबराती हो। तुम कहीं वो सीरियल किलर तो नहीं जिसका जिक्र वो पुलिस कर रही थी?" विशाल ने मजाकिया अंदाज में कहा।

"अपने कपड़े खोलो," श्वेता ने बहुत ही आदेशात्मक अंदाज में कहा।

"क्या बात है, तुम तो मेरे से भी ज्यादा फास्ट हो," विशाल अपने कपड़े खोलते हुए बोला।

उसने सारे कपड़े उतार दिए।

श्वेता किचन की ओर चल दी। "अरे, तुम किचन में क्यों जा रही हो?" विशाल अनायास ही बोल उठा। श्वेता ने अपनी उँगली से उसे बुलाया।

अब विशाल को कुछ शक होने लगा था। फिर भी वह सतर्कता से श्वेता के पास चला गया।

"विशाल, मैं ही वो सीरियल किलर हूँ," श्वेता ने गंभीर स्वर में कहा।

विशाल के होश उड़ गए।

"तुम एक बात बताओ, तुमने देविका को सिर्फ मेरे कारण छोड़ दिया?"

"मुझे प्लीज छोड़ दो," विशाल गिड़गिड़ाने लगा। वह श्वेता से शक्तिशाली था, उसके पास उसे अपने बस में करने की शक्ति थी। फिर भी, वह उसके सामने ऐसे गिड़गिड़ा रहा था जैसे कोई हिरन किसी शेरनी के सामने हो।

श्वेता जोर-जोर से हँसी, "अरे, मैं मजाक कर रही थी। मुझे तुम पसंद आए।"

उसने अपने सारे कपड़े उतार दिए। "तुम मेरे साथ जो चाहो, वो कर सकते हो।"

विशाल को समझ ही नहीं आ रहा था कि उसके साथ क्या खेल चल रहा था। फिर उसने श्वेता के नग्न शरीर को देखा। उसने आज तक इतनी सुंदर स्त्री नहीं देखी थी। यकीन नहीं आ रहा था कि यह स्त्री उसके लिए थी। विशाल ने श्वेता को अपनी बाहों में भर लिया और उसे जगह-जगह किस करने लगा। तभी, विशाल की चीख निकल गई। उसके ऐनल में एक चाकू जोर से धंस गया। विशाल की आँखें चौड़ी हो गईं और उसने श्वेता के चेहरे पर वह क्रूर हँसी देखी।

"मजा आ रहा है, विशाल?" श्वेता ने बहुत ही क्रूर अंदाज में कहा।

उससे पहले कि वो कुछ भी कर पाता, चाकू के सधे हुए वार से उसकी दोनों आँखें निकल गईं। वह जोर-जोर से चीख रहा था। फिर, श्वेता ने उसके शरीर के सबसे संवेदनशील हिस्सों को काट दिया। विशाल जोर-जोर से रो रहा था। श्वेता ने उसकी गर्दन की जुगुलर वेइन्स काट दीं।

"मैंने तुझे कहा था मैं ही हूँ वो खूनी हूँ!" श्वेता चीखी।

विशाल की किचन उसके खून से सराबोर हो गई थी।

श्वेता ने चाकू को वहीं फेंका, अपने कपड़े उठाए और विशाल की अलमारी से उसके कपड़े निकालकर पहन लिए। उसने अपना चेहरा एक मंकी कैप से ढक लिया, विशाल की गाड़ी की चाबियाँ ली और बेसमेंट की ओर भागी। वह गाड़ी लेकर निकल गई।

एएसआई कमल की चेतावनी के बावजूद, श्वेता ने विशाल का खून कर दिया था।

श्वेता ने देविका से अनोखा बदला लिया था - उसने देविका के प्रेमी की हत्या कर दी और दोनों को जुदा कर दिया। लेकिन श्वेता ने देविका को ऐसा दर्द क्यों दिया? विशाल की गलती क्या थी? क्यों श्वेता उन सब लोगों को मार रही थी जिनका कुछ न कुछ कनेक्शन उसकी ही कंपनी से था? आखिर श्वेता को ऐसा क्या पागलपन सवार था? क्या थी उसकी मनोस्थिति?

श्वेता की मनोस्थिति को समझना एक जटिल कार्य था, क्योंकि यह विभिन्न मनोवैज्ञानिक और सामाजिक कारकों पर निर्भर करता था। उसका व्यवहार शायद शक्ति और नियंत्रण की इच्छा को दर्शाता था। वह अपने शिकारों पर शारीरिक और भावनात्मक प्रभुत्व स्थापित करने की कोशिश कर रही थी, जो मनोवैज्ञानिक रूप से किसी असुरक्षा या पहले के शक्तिहीनता के एहसास से उपज सकता था।

* ϕ *

ASI कमल और प्रद्युम्न इस वक्त विशाल के घर में थे। देविका को भी वहां बुलाया गया था। कमरे की हवा में गहरी चिंता थी, और सबकी आँखों में एक अजीब सी घबराहट महसूस हो रही थी।

“तुमने उस लड़की को देखा था, जिसे विशाल ने गोद में उठाया था?” ASI कमल ने देविका से पूछा, उसकी आवाज में एक दृढ़ता थी।

“नहीं, सर। परंतु आपको पब के CCTV से सारी जानकारी मिल जाएगी,” देविका ने आँसुओं के साथ जवाब दिया। उसका चेहरा घबराया हुआ था, जैसे वह खुद भी इस कंफ्यूजन में थी कि क्या सचमुच वही हो रहा था, जैसा वह सोच रही थी।

“तुम्हारी वार्निंग काम नहीं आई,” प्रद्युम्न ने कड़े शब्दों में कहा। उसकी आवाज में गुस्सा और निराशा दोनों थे।

“हाँ, सर। कुल मिलाकर अब तक छह हत्याएं हो चुकी हैं। तीन पुरुष, दो स्त्री और एक बच्चा,” कमल ने एक गहरी सांस ली और अपनी बात कही।

“कमल, हमें इस कातिल को जल्दी से जल्दी पकड़ना पड़ेगा। वो बहुत ही खतरनाक है,” प्रद्युम्न ने तनाव में आकर कहा।

“जी, सर,” कमल ने उत्तर दिया, और उसके मन में भी एक बेचैनी बढ़ने लगी।

इसी बीच, देविका की नजरें मोबाइल स्क्रीन पर टिकी थीं—विशाल का वही मैसेज, जिसमें उसने ब्रेकअप की बात कही थी। उसने बार-बार खुद को समझाने की कोशिश की, उस मैसेज को नज़रअंदाज़ करना चाहा, लेकिन उसकी उंगलियाँ हल्के से कांप रही थीं।

वह विशाल को अपना जीवनसाथी बनाना चाहती थी। उसने कभी सोचा भी नहीं था कि विशाल उससे इस तरह रिश्ता तोड़ देगा—और फिर, खुद उसकी ज़िंदगी का ऐसा भयावह अंत होगा। यह सब एक भयानक सपने जैसा लग रहा था, जिसे वह चाहकर भी झुठला नहीं पा रही थी।

कमल ने फिर से कहा, “सर, उस लड़की ने विशाल पर ऐसा क्या जादू कर दिया था कि उसने देविका से ब्रेकअप कर लिया?”

“उससे महत्वपूर्ण यह है, कमल, कि उस हत्यारिन लड़की ने ऐसा क्यों किया,” प्रद्युम्न ने गंभीरता से कहा, उसके चेहरे पर एक खौफनाक सोच साफ दिखाई दे रही थी।

“मैं समझा नहीं, सर। आप क्या कहना चाह रहे हैं?” कमल ने चकराए हुए स्वर में पूछा।

“कमल, ये बहुत सीधी बात है। अगर उस लड़की को विशाल को मारना ही था, तो वो उसे सीधे पब से उसके घर लेकर जाती और मार डालती। लेकिन उसने ऐसा नहीं किया। रास्ते में रुक कर उसने देविका को बुलाया और उसे यह दर्दनाक खबर दी कि विशाल उससे ब्रेकअप कर रहा है,” प्रद्युम्न ने धीरे-धीरे समझाया।

कमल की आँखों में एक झलक सी समझ आई, और वह बोला, “समझ गया, सर। वो विशाल को मारकर देविका को मानसिक पीड़ा देना चाहती थी।”

प्रद्युम्न ने उसकी बात को तस्दीक किया, “ठीक यही बात है, कमल। वह लड़की एक खास तरीके से देविका को भी तोड़ना चाहती थी, ताकि उसकी जिंदगी में और भी ज्यादा तूफान आए।”

सभी लोग कुछ देर तक गहरे विचार में डूब गए, जैसे वे इस हत्याकांड की गुत्थी को सुलझाने के लिए अपने हर कदम को सटीक रूप से सोच रहे थे।

“हाँ कमल, तुम समझ गए। ये लड़की पागल नहीं है, वो बहुत ही शातिर है। पागल होने का बस ढोंग कर रही है,” प्रद्युम्न ने गंभीर स्वर में कहा, उसकी आँखों में गहरी चिंता और खौफ था।

“सर, या ये भी हो सकता है कि वो लड़की इतनी ज्यादा पागल है कि उसे रियलिटी का कोई अहसास ही नहीं है,” कमल ने अपनी बात रखी, उसकी आवाज में भी एक तरह का संदेह था।

“क्या मतलब कमल?” प्रद्युम्न ने अपनी आँखें विशाल की नग्न लाश पर टिकाए हुए पूछा, जैसे वह किसी गहरे रहस्य को समझने की कोशिश कर रहा हो।

“बात साफ़ है, सर। वो लड़की पहले पब में विशाल को आकर्षित करती है, फिर एक सुनसान जगह पर रुक जाती है, देविका के आने का इंतजार करती है और फिर देविका को विशाल के हाथों से जलील करवा कर विशाल के घर जाती है,” कमल ने विश्लेषण करते हुए कहा। उसकी आवाज में एक सटीकता थी, जैसे वह हर कदम को समझ रहा हो।

“हाँ, कमल, तभी तो मैं कह रहा हूँ, वह शातिर है।” प्रद्युम्न ने गहरी साँस ली, और उसकी आँखों में खतरनाक सोच की चमक थी।

“सिर्फ देविका को जलील करने के लिए इतना खतरा उठाना...,” कमल ने कहा, उसकी आवाज में हैरानी थी, लेकिन समझदारी भी थी।

प्रद्युम्न थोड़ी देर के लिए चुप हो गया, उसकी आँखों में एक घना विचार था। वह सोच रहा था कि क्या वाकई कोई इतनी गहरी शातिर हो सकती है।

“तो फिर क्या वो लड़की पूरी पागल है?” प्रद्युम्न ने सिर झुका कर पूछा, जैसे वह किसी पजल के टुकड़े को जोड़ने की कोशिश कर रहा हो।

“हाँ सर, उसकी सारी हरकतें इस ओर इशारा करती हैं। वो दिमागी रूप से बहुत ही कमजोर है, लेकिन उसके इस पागलपन ने उसमें गज़ब का आत्मविश्वास भर दिया है,” कमल ने धीरे से कहा, उसकी आवाज में एक किस्म की ताजगी थी, जैसे वह सच को पहचान चुका हो।

“क्या मतलब कमल?” प्रद्युम्न ने उसकी बात को गंभीरता से सुना, उसकी आँखों में एक और सवाल था।

“सर, वो लोगों को उनके घरों में जाकर मारती है। किसी को भी ऐसे ही नहीं मार डालती। पहले अपने साथ उसे रात बिताने के लिए मोहित

करती है,” कमल ने कहा, उसकी आवाज में एक सटीकता थी, जैसे वह उस लड़की की मानसिकता को समझने की कोशिश कर रहा हो।

प्रद्युम्न गहरे ध्यान से उसकी बात सुन रहा था। वह पूरी स्थिति को परख रहा था, उसके दिमाग में सवालों की एक लहर दौड़ रही थी।

“और मेरे ख्याल से, यदि कोई मर्द उसकी इस मोहकता और काम वासना से लालायित ना हो, तो वह उसका खून नहीं करेगी,” प्रद्युम्न ने कमल की बात पूरी की, उसकी आवाज में एक तीव्रता थी, जैसे उसने सही उत्तर पा लिया हो।

“हाँ सर,” कमल ने धीरे से कहा, उसकी आँखों में एक समझदारी थी।

“इसी को लीगली मेगनौटन केस में लीगल पागलपन कहा गया है,” प्रद्युम्न ने एक संजीदगी से कहा, उसकी आवाज में गहरी सोच थी।

“यस सर। वो लड़की शायद किसी बहुत भयानक कुकर्म का शिकार हुई थी और उस कुकर्म ने उसे ऐसा बना दिया कि जो भी मर्द उसे नग्न देखेगा, उससे संबंध बनाने की कोशिश करेगा, उसके साथ वही करेगी,” कमल ने समझाया, उसकी बातों में एक दर्द और घृणा का मिश्रण था।

“इसीलिए सारे खून एक जैसे हैं। पहले पृष्ठभाग में चाकू, फिर आँखों को निकालना, फिर लिंग और टेस्टिकल काटना, और अंत में गला काटना” प्रद्युम्न ने धीरे से कहा, उसकी आवाज में गहरी घबराहट थी, जैसे वह उन सभी हत्याओं के पीछे छिपे मनोविज्ञान को समझने की कोशिश कर रहा हो।

कमल और प्रद्युम्न दोनों एक लम्बे समय तक उस खौफनाक हत्यारे की मानसिक स्थिति को समझने की कोशिश करते रहे। हर हत्या

के पीछे एक दर्दनाक कहानी छिपी थी, और अब उन्हें उस शातिर लड़की को पकड़ने के लिए एक और कदम उठाना था।

प्रद्युम्न और कमल धीरे-धीरे मामले की गुत्थी को सुलझाने की दिशा में आगे बढ़ रहे थे। प्रद्युम्न ने देविका से सवाल किया, "यह विशाल कहाँ काम करता था?"

"इसका अपना बिज़नेस था, सर, रियल एस्टेट का," देविका ने रोते हुए जवाब दिया, उसकी आवाज में दर्द और ग़म दोनों थे। वह जितना चाहती थी, उतना सब कुछ बता नहीं पा रही थी, लेकिन यह सच था कि अब वह एक कठिन स्थिति में फंसी हुई थी।

कमल ने प्रद्युम्न को देखा। उसकी आँखों में समझ की एक झलक थी। प्रद्युम्न को यह समझ में आ चुका था कि वह देविका से क्या जानना चाहते थे। यह पहला मामला था जहां एक पुरुष का न्यूरॉन फार्मा से कोई कनेक्शन नहीं था, जो मामले को और भी उलझा रहा था।

प्रद्युम्न ने वहां से जाने का मन बनाया। लेकिन तभी कमल ने देविका से एक और सवाल किया, "तुम कहाँ काम करती हो, देविका?"

"न्यूरॉन फार्मा," देविका ने बिना कोई हिचकिचाहट के जवाब दिया, जैसे यह कोई मामूली बात हो।

यह सुनते ही प्रद्युम्न रुक गया, उसकी चाल में एक ठहराव आ गया। उसने पलटकर कमल की ओर देखा। कमल मुस्कुरा रहा था, उसकी आँखों में गहरी समझ थी।

दोनों ने बिना एक शब्द कहे अपनी आँखों में बात की। दोनों को अब यह साफ़ समझ में आ गया था कि न्यूरॉन फार्मा का इन हत्याओं से कोई गहरा कनेक्शन था। यह एक बड़ी मिस्ट्री थी, और अब यह उनका मिशन था कि वे इस कनेक्शन को खोजना शुरू करें।

प्रद्युम्न ने एक गहरी साँस ली, और कमल के साथ वह फिर से आगे बढ़ने के लिए तैयार हो गया। इस नए मोड़ ने उन्हें एक नई दिशा दे दी थी, और अब उन्हें किसी भी कीमत पर इस कनेक्शन तक पहुँचना था।

* ɸ *

एपिसोड पांच - आंखरी दांव

श्वेता, प्रद्युम्न और कमल के षड्यंत्र से अनजान, अपने घर पर आराम कर रही थी। वह हाल ही में उठी थी और अपनी डायरी में खोई हुई थी। डायरी के पन्नों में उसके असली पिता की तस्वीर थी, जिसे देखते ही उसे वह रात याद आ गई जब उसने आदर्श को अपने पिता की कार से छेड़छाड़ करते हुए देखा था। उस समय उसे कोई शक नहीं हुआ क्योंकि आदर्श और उसके पिता एक पर्सनल मीटिंग के लिए साथ जा रहे थे। लेकिन आदर्श ने अचानक अपना मन बदल लिया और अगले दिन अलग से गया। उसके पिता ब्रेकफेल के कारण ट्रक से टकरा गए और उनकी मौत हो गई।

श्वेता ने धीरे-धीरे सच्चाई को समझा और अपनी मां, मलाइका, और खान चाचा को भी बताया। अब, अपने आंसू पोंछते हुए, उसने डायरी के पन्नों को पलटा और एक नया नाम लिखा—ASI कमल।

तभी खान चाचा खाना लेकर उसके कमरे में आए। "बेटी, तुम्हारी मां को बेल मिल गई है," उन्होंने खुशखबरी दी।

"यह तो बहुत ही अच्छी खबर है, चाचा," श्वेता ने उत्साह से कहा।

"हाँ, और वो कल आ जाएँगी।"

"तो फिर आज रात के बाद यह खेल भी खत्म हो जाएगा," श्वेता ने कहा, उसकी आँखों में एक खतरनाक चमक थी।

खान चाचा ने श्वेता की आँखों में गहराई से झाँका, उन्हें एक अनहोनी का अहसास हुआ। "बेटी, आज ASI कमल हमारी कंपनी में आया था। उसने देविका के साथ सभी कर्मचारियों से मुलाकात की।"

"मुझे पता है, खान चाचा। मुझ तक खबर पहुँच गई है।"

"बेटी, वो तुम्हारे और तुम्हारी मां के बारे में जानने की कोशिश कर रहा था।"

"मुझे पता है, खान चाचा।"

"बेटा," खान चाचा घबराए हुए स्वर में बोले, "उसने मुझसे भी पूछताछ की थी।"

"उसने आपको परेशान तो नहीं किया?"

"नहीं, बेटा, पर वो शायद समझ गया है कि आदर्श की हत्या तुम्हारी मां ने नहीं की है।"

"क्या? आप क्या कह रहे हैं, खान चाचा?"

"हाँ, बेटा। जिस तरह से वो पूछताछ कर रहा था, मुझे लगता है कि उसे तुम पर शक हो गया है। तुम आज अपने शिकार पर मत जाओ। प्लीज बेटा।"

"हाहा। खान चाचा, मैंने कहा था ना कि जब तक मेरी मां बाहर नहीं आती, यह खेल चलता रहेगा।"

"बेटा, प्लीज। वैसे भी तुमने आदर्श के सभी चमचों को मार डाला है।"

"खान चाचा, आप मेरे बारे में सब जानते हैं। शायद मम्मी के बाद आप ही हैं जिनको मेरी सच्चाई पता है।"

"बेटा, इसलिए तो कह रहा हूँ। अब बस कर। कुछ दिन के लिए रुक जा।"

"नहीं, खान चाचा। मेरा आज शिकार पर जाना बहुत जरूरी है। क्योंकि अगर मैंने यह नहीं किया तो सब किया कराया बेकार हो जाएगा।"

"मैं कुछ समझा नहीं, श्वेता बेटी।"

श्वेता ने टीवी ऑन कर दिया। स्क्रीन पर ASI कमल का बयान चल रहा था। "उस कातिल में दम है तो मुझे मार कर दिखाए। मैंने पहले भी कहा था कि अगर हिम्मत है तो इन बेकसूर लोगों को मारने के बदले

मुझे मारे। अगर मुझे मारने में वह सफल हो गई तो यह पुलिस की हार होगी।"

"यह क्या बोल रहा है? यह वही ASI तो है जो मुझसे पूछताछ करने आया था।"

"यह शायद यह जानता है कि मैंने और मम्मी ने एक साल बहुत कोशिश की लीगली आदर्श को मेरे असली पिता का कातिल साबित करने की। परंतु हम विफल हो गए। उल्टा उसने ही यह बोलकर कि उनकी मानसिक स्थिति ठीक नहीं है, मेरी मम्मी को अपनी ही कंपनी के बोर्ड से हटवा दिया।"

"हाँ। मेमसाब ने उससे शादी क्या की, उसने पूरा खेल पलट दिया। एक साल वह राक्षस इस घर पर एक बहुत बुरे साये की तरह था।"

"यह ASI शायद मेरी सच्चाई जान गया है। मुझे नहीं पता कैसे। परंतु अब यह जिंदा रहा तो मेरा राज़ खुल जाएगा।"

"परंतु बेटा, इसने तो अब तक कई लोगों को बता दिया होगा।"

"हो सकता है। मैं इससे सब सच निकलवा लूंगी। आप चिंता मत करो, खान चाचा।"

"बेटा, तुम बहुत ओवर कॉन्फिडेंट हो गई हो। तुम एक नाजुक सी लड़की हो। यह ASI तुम्हें पकड़ लेगा।"

"खान चाचा, आपके जो गुर मुझे सिखाए हैं, वे इस नाजुक सी लड़की को इतना खौफनाक बना देते हैं कि यह पुलिस वाला भी मेरे सामने पानी भरेगा।"

"बेटा..."

"बस खान चाचा। मैं कुछ सुनना नहीं चाहती।"

श्वेता ने खान चाचा की बात बीच में काट दी और अपने कमरे से बाहर चली गई। खान चाचा को अब बहुत डर लग रहा था। उन्हें समझ

नहीं आ रहा था कि ASI कमल को सब कुछ कैसे पता चल गया और श्वेता बेटी क्यों खुद उसके पास जाकर फंसना चाहती थी।

षड़यंत्र गहरा था, और शायद खान चाचा की समझ के बाहर था। श्वेता का खेल किसी के भी समझ से परे था। कमल को लग रहा था कि उसने पागल लड़की को चैलेंज करके सही किया है और अब उसे गिरफ्तार करने की तैयारी कर ली है। यह खेल अब एक और जान लेने वाला था।

* ϕ *

इंस्पेक्टर प्रद्युम्न और ASI कमल दोनों एक साथ कमल के दोस्त के घर पर थे। वह दोस्त नाइट ड्यूटी पर था, इसलिए प्रद्युम्न ने कमल के साथ कुछ समय बिताने का फैसला किया। रात के करीब नौ बजे थे, और एएसआई कमल रॉयल चॉइस व्हिस्की का तीसरा पेग बना रहा था।

"कमल, तुम्हें क्या लगता है, न्यूरॉन फार्मा और इन हत्याओं के बीच क्या संबंध हो सकता है?" प्रद्युम्न ने गंभीरता से पूछा। "सर," कमल ने हिचकी लेते हुए जवाब दिया, "मुझे नहीं लगता कि न्यूरॉन फार्मा की मालकिन मलाइका, जो अभी जेल में है, इसमें शामिल है।" "हां, कमल। वह जेल से बाहर नहीं आई है। पब के सीसीटीवी फुटेज में दिखी लड़की कोई बीस- बाईस साल की थी।"

"हां, सर। लेकिन उसका चेहरा स्पष्ट नहीं था।"

"तुम्हें क्या लगता है, यह लड़की कौन हो सकती है?" "सर, आज मैंने न्यूरॉन फार्मा जाकर कुछ जानकारी इकट्ठा की। लेकिन जितना जाना, उससे मैं और उलझ गया हूं।"

"कैसे, कमल?"

"सर, पहले न्यूरॉन फार्मा के फाउंडर जय कपाड़िया की एक हादसे में मौत हो गई। फिर आदर्श, जो सीओओ (COO) था, उनकी विधवा मलाइका से शादी कर लेता है।"

"फिर मलाइका आदर्श पर ही अपने पहले पति की हत्या का आरोप लगाती है," प्रद्युम्न ने कहा, अपनी व्हिस्की का तीसरा पेग खत्म करते हुए।

"हां सर, लेकिन केस की जांच में साफ हो गया था कि आदर्श का जय कपाड़िया की मौत से कोई लेना-देना नहीं था।"

"बिल्कुल," प्रद्युम्न ने सिर हिलाया। "इसके बावजूद, आदर्श ने मलाइका को मानसिक रूप से बीमार घोषित कर, खुद को सीईओ (CEO) बनवा लिया।"

कमल ने सिर हिलाया, "हाँ सर। लेकिन आदर्श के सीईओ बनने के कुछ महीनों बाद ही मलाइका ने उसे मौत के घाट उतार दिया।"

"हाँ, और मैंने ही उसे गिरफ्तार किया था। फिर भी, मुझे नहीं लगता था कि उसने आदर्श की हत्या की थी।"

"अब इन हालिया हत्याओं को देखकर, लगता है कि शायद मलाइका निर्दोष थी।"

"उनको जल्दी ही सजा हो गई। इतनी बड़ी कंपनी की मालकिन होने के बावजूद, उन्होंने अपना जुर्म कबूल कर लिया और सजा मंजूर कर ली," प्रद्युम्न बोला।

"हाँ सर, उनके बाद उनकी और जय कपाड़िया की पुत्री को बोर्ड ऑफ़ डायरेक्टर्स ने सीईओ बना दिया," कमल ने जोड़ा।

"क्या? उसकी उम्र कितनी है?" प्रद्युम्न ने आश्चर्य से पूछा। "कुछ बीस साल, सर," कमल ने जवाब दिया।

प्रद्युम्न सोच में पड़ गया। कमल ने एक नजर उस पर डाली और समझ गया कि प्रद्युम्न क्या सोच रहा था।

"बिलकुल सर, आप सही सोच रहे हैं," कमल ने सहमति जताई। "क्या, कमल?" प्रद्युम्न अनायास बोल उठा। उसके स्वर में एक साथ ख़ुशी और दर्द की झलक थी। क्या वे इस केस को सुलझा चुके थे? "हाँ सर, हमारी सस्पेक्ट नंबर वन है श्वेता," कमल ने दृढ़ता से कहा। "श्वेता कौन है?"

"सर, वो मलाइका की बेटी है। थोड़ी अस्थिर है, उसे जल्दी गुस्सा आ जाता है, और अपने कर्मचारियों के साथ भी सख्त व्यवहार करती है," कमल ने जानकारी दी।

"लेकिन उसे सीईओ तो बोर्ड ऑफ़ डायरेक्टर्स ने बनाया," प्रद्युम्न ने पूछा।

"हाँ सर, कंपनी में दिक्कत ये है कि उन्हें जय कपाड़िया परिवार का ही कोई सदस्य सीईओ चाहिए, नहीं तो वे आपस में ही लड़ते रहते हैं।"

"और श्वेता के अलावा उनके पास कोई और विकल्प नहीं था," कमल ने बताया।

"हाँ सर, मलाइका जब जेल से आएगी, तो उसे वे लोग वापस सीईओ बना देंगे," कमल ने कहा।

"तो क्या ये श्वेता इन छह हत्याओं की जिम्मेदार है? इतनी क्रूर हत्यारिन?" प्रद्युम्न ने सवाल किया।

"कह नहीं सकता, सर, परन्तु वह संदेह के घेरे में है," कमल ने कहा।

कमल ने अपने और प्रद्युम्न के लिए एक और व्हिस्की का पेग बनाया।

दोनों व्हिस्की का आनंद लेते हुए अपनी कुर्सियों पर बैठ गए। प्रद्युम्न गहरी सोच में डूब गया कि आखिर एक बीस साल की लड़की सभी लोगों का खून क्यों कर रही थी।

"सर, जो आप सोच रहे हैं, मैंने उसका पता लगा लिया है," कमल ने कहा।

"क्या, कमल?" प्रद्युम्न ने उत्सुकता से पूछा।

"देविका ने बताया कि आदर्श कई बार कह चुका था कि वह उसे उतना आनंद नहीं दे पाती जितना श्वेता," कमल ने खुलासा किया। "क्या कह रहे हो, कमल?" प्रद्युम्न ने अविश्वास से पूछा।

"हाँ, सर," कमल ने पुष्टि की।

"फिर तो ये केस शीशे की तरह साफ़ है," प्रद्युम्न ने अपना व्हिस्की का गिलास एक ही झटके में खत्म करते हुए कहा।

"यस सर," कमल ने सहमति जताई।

"श्वेता ही हमारी कातिल है," प्रद्युम्न ने निष्कर्ष निकाला। "बस, सर। अगर उसे रंगे हाथों पकड़ लिया जाए, तो केस सॉल्व हो जाएगा। क्योंकि अभी हमारे पास कोई भी प्रत्यक्ष सबूत नहीं है, सिर्फ थ्योरी है," कमल ने सुझाव दिया।

"उसके फिंगरप्रिंट लेते हैं और क्राइम सीन से मिलाते हैं," प्रद्युम्न ने कहा। उसके स्वर में हल्की लड़खड़ाहट थी, शायद चौथा पेग उसके लिए थोड़ा ज्यादा हो गया था। पहले तीन पेग तक वह बिलकुल भी नशे में नहीं था, लेकिन चौथे ने उस पर अधिक प्रभाव डाल दिया था। "हाँ सर, लेकिन यही सबसे बड़ी दिक्कत है," कमल ने चिंता जताई। "क्या दिक्कत?" प्रद्युम्न ने पूछा।

"श्वेता को एडर्मेटोग्लिफ़िया (Adermatoglyphia) है" कमल ने बताया।

"क्या कह रहे हो, कमल?"

"हाँ सर, और आप जानते ही हैं कि एडर्मेटोग्लिफ़िया (Adermatoglyphia) एक ऐसी बीमारी है जिसमें व्यक्ति के फिंगरप्रिंट नहीं आते," कमल ने विस्तार से बताया।

प्रद्युम्न नशे में था, लेकिन उसे अच्छी तरह समझ आ गया था कि श्वेता के खिलाफ कोर्ट में कुछ भी साबित कर पाना मुश्किल होगा। क्या इसीलिए श्वेता इतनी बिंदास थी? उसे पता था कि उसके फिंगरप्रिंट कहीं नहीं मिलेंगे।

"फिर कैसे साबित करेंगे, कमल? हम उसे कैसे पकड़ेंगे? और तो और, कोई पुख्ता सबूत ही नहीं है।"

"यस सर। यही नहीं, वह अपनी कंपनी के लोगों का डेटाबेस निकालती है और किसी को भी टारगेट कर देती है।"

"शायद उसके दूसरे पिता आदर्श ने उसका शोषण किया और इसलिए वह एक पागल किलर बन गई है।"

"हाँ सर। फिट केस फॉर सेक्शन 84 IPC।"

"वो तो ठीक है, कमल, परन्तु उसे पकड़कर हमें कोर्ट में पेश करना चाहिए, फिर भले ही कोर्ट उसे इनसैनिटी के आधार पर छोड़ दे।"

"हाँ सर।"

"वेट, कमल।"

"क्या हुआ सर?"

"यह इनसैनिटी का मामला ही है न?"

"क्यों सर, कोई शक?"

"हाँ, कमल। कल मैं पुलिस स्टेशन में फाइल चेक करके बताऊंगा।"

"क्या सर?"

"कुछ मिसिंग है। श्वेता की हत्याएं इतनी सिंपल नहीं हैं।"

"सर, कुछ भी मिसिंग नहीं है। केस साफ है। आदर्श ने श्वेता का शोषण किया और उसे एक साइकोलॉजिकल बीमारी दे दी। आदर्श उसका शोषण करता तो उसे बहुत दर्द होता। क्योंकि आदर्श उसके साथ हर तरीके का अप्राकृतिक शोषण भी करता था।"

"वो तो ठीक है, कमल।"

"इसलिए, सर, श्वेता को लगा कि दर्द ही आनंद है। उसे समझ ही नहीं आता था कि वह जो दर्द मर्दों को दे रही थी, वह उनके लिए आनंद नहीं था।"

"हाँ, कमल। परन्तु ऐसा था तो रैंडम किलिंग होनी चाहिए।"

"सर, रैंडम किलिंग ही तो है। हाँ, चूँकि उसके लिए अपने एम्प्लाइज का डेटाबेस एक्सेस करना आसान था, इसलिए उसने वो ही किया। उनके साथ उनकी पत्नी और बच्चों को भी तो वह मार डालती थी।"

"यही तो पॉइंट है, कमल। वह यदि पागल ही है तो पत्नी और बच्चों को क्यों मार रही थी? सबूत मिटाने के लिए ही न?"

"सर, या यह भी हो सकता था कि उसे लगा कि यह उसके खेल को और आनंदमय बना देता है।"

"मतलब, कमल। मैं समझा नहीं।"

"सर, मतलब साफ है। उसने करुण शर्मा की पत्नी को पहले मारा और फिर करुण को अपने वस्त्र खोलने के लिए कहा।"

"हाँ, ये तो है।"

"तो फिर। क्योंकि उसे अपने पागलपन में पता ही नहीं चल रहा था कि वह हत्याएं कर रही है। वह सिर्फ इसे एक बड़ों का खेल समझ रही थी।"

"नहीं, कमल। तुम सब सही बोल रहे हो। परन्तु कुछ गड़बड़ है। मुझे अभी नहीं पता परन्तु मुझे पता चल गया है।"

"क्या सर?"

"यही कि कुछ है।"

"कोई बात नहीं, सर, आप आराम से सोचिए।" कमल ने व्हिस्की का एक और पेग बना लिया और इंस्पेक्टर प्रद्युम्न को दिया।

"बस यार, कमल, ज्यादा ही हो जाएगी। घर भी जाना है।"

"सर, यही आराम कर लीजिये। मैं भाभी जी को बोल देता हूँ।" कमल ने कहा और व्हिस्की का गिलास आगे कर दिया। उसने फिर कहा, "और क्या पता, मेरे से बात करते-करते आपको याद भी आ जाए कि वो क्या बात है जो मैं नहीं देख पा रहा।"

"ठीक है यार। तुम कहते हो तो लाओ एक लास्ट पेग पी ही लिया जाए।" प्रद्युम्न ने गिलास उठाते हुए और एक ही सांस में पीते हुए कहा।

"सर, आप थोड़ा आराम कीजिए। मैं कुछ खाने-पीने का लेकर आता हूँ। रात के दस बज रहे हैं, दुकानें बंद हो जाएंगी।"

"ठीक है। जल्दी आ जाना। मैं तब तक थोड़ा आराम कर लूं।" प्रद्युम्न उठा और लड़खड़ा गया। शायद व्हिस्की के पांच पेग उसके लिए बहुत थे। कमल ने भी उतनी ही व्हिस्की पी थी, परन्तु शायद प्रद्युम्न अब बूढ़ा हो चला था। कमल ने प्रद्युम्न को कंधे का सहारा दिया और अंदर बेडरूम में लेता दिया।

"बस, मैं अभी आया।"

प्रद्युम्न इन्हीं विचारों में खो गया था। श्वेता लोगों का खून तो कर रही थी, परन्तु यह केस इतना सिंपल नहीं था। इसमें कुछ तो था जो उसे

अहसास हो रहा था, परन्तु समझ में साफ नहीं आ रहा था। कोई तो षड्यंत्र था।

तभी दरवाजे पर आहट हुई।

"आ गए तुम, कमल? जल्दी ही आ गए।" प्रद्युम्न जोर से बोला।

एक साया प्रद्युम्न के पास चलता हुआ आया।

"बोलो, कमल, कुछ बोलते क्यों नहीं?"

"मैं कमल नहीं हूँ।" एक बहुत ही मृदु आवाज ने कहा।

प्रद्युम्न ने पहली बार अपने जीवन में इतनी सुंदर लड़की देखी थी। श्वेता एक सफेद गाउन पहने उसके सामने खड़ी हुई थी।

* ф *

एपिसोड छह - खूनी अंत

श्वेता ने प्रद्युम के पास आकर मोहक स्वर में कहा, "मेरी गाड़ी खराब हो गई है, और मोबाइल डिस्चार्ज है।"

"कोई बात नहीं, मेरे मोबाइल से फोन कर लीजिए," प्रद्युम ने धीमे स्वर में उत्तर दिया।

वह श्वेता के ही बारे में सोच रहा था। इतनी सुंदर स्त्री, मानो अप्सरा, यह कैसे किसी का खून कर सकती थी? प्रद्युम, एक शातिर पुलिस अधिकारी, जिसने अनगिनत केस सुलझाए थे, श्वेता के मोहक रूप से प्रभावित हो रहा था। उसका सफेद गाउन, दूधिया त्वचा, और कोमल जवानी उसे विचलित कर रहे थे।

प्रद्युम को समझ जाना चाहिए था कि वह उसी मकान में था जहां श्वेता को खून करने का चैलेंज दिया गया था। श्वेता मानसिक रूप से अस्थिर थी, उसे वास्तविकता का भान नहीं था। उसने फोन श्वेता की ओर बढ़ाया। उनके हाथों का स्पर्श होते ही प्रद्युम के शरीर में सिहरन दौड़ गई, और फोन गिर गया। श्वेता हल्के से मुस्कुराई और झुककर फोन उठाने लगी। प्रद्युम उसकी ओर देखता रहा, उसकी नजरें श्वेता के गाउन के भीतर झांक रही थीं।

प्रद्युम की दृष्टि श्वेता के गौरवर्णी स्तनों पर टिक गई थी। श्वेता ने जानबूझकर या अनजाने में फोन उठाने में समय लिया। प्रद्युम को उसका यौवन ही दिख रहा था, और वह भूल गया कि वह एक सीरियल किलर को पकड़ने की योजना बना रहा था।

श्वेता ने मुस्कुराते हुए कहा, "सर, यह फोन लॉक है, खोलिए।"

प्रद्युम वासना से भर चुका था। वह अपने आप को नियंत्रित नहीं कर पा रहा था। शायद उसने शराब भी ज्यादा पी ली थी। उसने कहा, "क्या खोलूं?"

श्वेता ने मोहक अंदाज में कहा, "आप क्या खोलना चाहते हैं?"

प्रद्युम ने श्वेता को पास खींच लिया और बिस्तर पर लिटा दिया। उसके गाउन की स्लीव्स नीचे करते हुए बोला, "यह खोलना चाहता हूं।"

श्वेता हल्के से हंसी और बोली, "मेरी गाड़ी खराब है, मुझे घर जाना है।"

"तेरी गाड़ी खराब है और मेरी नियत," प्रद्युम ने गाउन खींचते हुए कहा। श्वेता के स्तन दिख रहे थे। वह पागल सा हो चुका था। श्वेता ने अपनी छाती को ढकते हुए कहा, "तो ठीक है, पहले अपने कपड़े खोलिए।"

प्रद्युम ने एक पल की देरी नहीं की और अपने कपड़े उतार दिए। जब वह कपड़े उतार रहा था, श्वेता अपने गाउन का बकल खोल रही थी। शायद उसे भी जल्दी थी।

प्रद्युम ने श्वेता के गाउन को खींचकर उतार दिया। वह पूर्ण नग्न थी। प्रद्युम ने उसके दूधिया शरीर को देखकर उसे जगह-जगह चूमना शुरू कर दिया। वह यह भूल गया कि श्वेता के गाउन के बकल में एक चाकू था, जिसे श्वेता ने अपने हाथ में छुपा रखा था।

श्वेता ने मोहक अंदाज में कहा, "आपको पूरे मजे चाहिए?"

प्रद्युम ने जवाब दिया, "हां।"

"ठीक है," श्वेता ने कहा और फिर अचानक, प्रद्युम की आंख पर जोरदार प्रहार किया। वह दर्द से कराह उठा। श्वेता के अगले प्रहार ने उसकी दूसरी आंख भी बेकार कर दी। प्रद्युम दर्द से कराहते हुए बिस्तर पर गिर गया। तभी श्वेता ने चाकू उसके एनल में घुसेड़ दिया और मरोड़ दिया। प्रद्युम की चीखें निकल गईं। श्वेता को अजीब सा आनंद हो रहा था।

श्वेता ने उसकी पीठ पर चाकू गोदना शुरू कर दिया। प्रद्युम उसे हटाने की असफल कोशिश कर रहा था। उसने आखिरकार श्वेता को झटका देकर हटा दिया। वह खड़ा हो गया, परन्तु श्वेता ने फिर से प्रहार किया और उसके लिंग और टेस्टिकल्स काट दिए।

"माफ़ कर दे मुझे... प्लीज," प्रद्युम्न बुरी तरह कराहते हुए बोला।

"इतनी जल्दी हो गया तेरा?" श्वेता ने क्रूरता से हंसते हुए कहा। "यार, तू भी बाकि लोगों जैसा ही है, बिलकुल ठस। थोड़ा भी दर्द सहन नहीं होता। मजा ही नहीं लेने देते।" उसकी आँखों में एक वहशी दरिंदे की चमक थी। अगर प्रद्युम्न अपनी आँखों से श्वेता को देख पाता, तो शायद उसके चेहरे के उस खूंखार पागल दरिंदे वाले भाव को देखकर ही दम तोड़ देता।

इस वक्त श्वेता किसी क्रूर कातिल से कम नहीं लग रही थी। कोई सामान्य इंसान किसी को इतना दर्द नहीं दे सकता था। प्रद्युम्न ने तो उसका कुछ बिगाड़ा भी नहीं था। लेकिन आदर्श के शोषण ने श्वेता को एक ऐसी दरिंदा बना दिया था जिसके लिए किसी की भी जान लेना एक खेल बन चुका था।

प्रद्युम्न जमीन पर गिर गया। वहां खून ही खून था। "और मजे लेने हैं?" श्वेता पागलों की तरह बोली।

प्रद्युम्न कराह रहा था। उसे समझ नहीं आ रहा था कि किस दर्द के लिए रोये। उसके पीठ, आंखें, लिंग—सब कुछ बेतहाशा दर्द कर रहे थे।

"ठीक है यार। ख़त्म करते हैं। तू कुछ जवाब ही नहीं दे रहा। मुझे लगा आज तो मजा आएगा," श्वेता ने नीरसता से कहा।

उसने प्रद्युम्न को देखा, जो दर्द से कराहते हुए अपनी जांघों के बीच हाथ दबाए बैठा था। श्वेता ने उसके बालों से उसका चेहरा ऊपर उठाया।

उसकी आंखें बाहर निकल आई थीं। "यार, तूने वैसे अच्छे मजे दिए," उसने एक कुटिल मुस्कान के साथ कहा।

फिर उसने प्रद्युम्न के होठों पर अपने होंठ रख दिए। लम्बा चुम्बन लेने के बाद वह बोली, "अच्छा चुम्मा था। चल, अब देखते हैं क्या ये गर्दन शरीर से बाहर आकर इतना बढ़िया चुम्मा दे पाती है।"

श्वेता ने यह कहते हुए उसकी गर्दन पर वार करना शुरू कर दिया। जुगुलर वेइन्स कट गईं, और खून का बहाव रुकने का नाम नहीं ले रहा था। "यार, ये गर्दन तो बाहर नहीं आई, पर इतना खून! छी छी, सारा मजा खराब कर दिया। थोड़ा बहुत खून ठीक है, पर तू भी बाकियों जैसा निकला। इतना खून! मेरे दूसरे पापा को भी मेरा खून ज्यादा पसंद नहीं आता था।"

श्वेता पागलों की तरह बोलती जा रही थी। प्रद्युम्न कब का लाश बन चुका था।

श्वेता ने उठकर अपना गाउन पहना और बाहर निकल गई। गाड़ी में बैठकर वह चली गई। इन सब में शायद पंद्रह मिनट लगे होंगे, लेकिन ये पंद्रह मिनट प्रद्युम्न के जीवन के सबसे दर्दनाक पंद्रह मिनट थे।

ASI कमल खाना लेकर घर आया और यह दृश्य देखकर उसके पैरों तले जमीन खिसक गई। उसकी मौत प्रद्युम्न ने अपने सिर ले ली थी।

कमल प्रद्युम्न की इस निर्दयता से हुई हत्या से बुरी तरह टूट गया था। वह चीखा, "श्वेता!"

उसने श्वेता को केवल इसलिए चैलेंज किया था ताकि उसे रंगे हाथों पकड़ सके। उसने कभी सोचा भी नहीं था कि उसके बॉस, इंस्पेक्टर प्रद्युम्न, श्वेता के जाल में फंसकर इतनी बुरी मौत मरेंगे। उसने अभी-अभी इंस्पेक्टर प्रद्युम्न की पत्नी को फोन कर बताया था कि आज वह घर नहीं आएंगे। अब वह उन्हें क्या मुँह दिखाएगा?

ASI कमल की आँखों में अंगार थे। उसे उस क्रूर कातिल श्वेता को पकड़ना था। वह समाज के लिए बहुत बड़ा खतरा बन चुकी थी।

* ɸ *

इस सुबह श्वेता की ख़ुशी का ठिकाना नहीं था। उसकी माँ जेल से रिहा हो चुकी थी। उनकी जमानत मंजूर हो गई थी। श्वेता ने अपनी माँ को कसकर गले लगा लिया। खान चाचा भी बेहद खुश थे। "मम्मी, I am very happy today," श्वेता ने कहा और एक बार फिर माँ को जोर से गले लगा लिया।

"बेटा, मैं आ गई हूँ। अब तू अपना वादा पूरा कर," माँ ने कहा।

"बिलकुल मम्मी, आज से कोई शिकार नहीं," श्वेता ने दृढ़ता से कहा।

मलाइका ने श्वेता को कसकर गले लगा लिया। खान चाचा भी उनकी इस पुनर्मिलन पर खुश थे। मलाइका एक साल से जेल में थी और इस दौरान श्वेता ने सात हत्याएं कर दी थीं। यह किस्मत ही थी कि श्वेता अब तक पकड़ी नहीं गई थी, वरना उसके खतरनाक खेल में कुछ भी हो सकता था।

माँ-बेटी दोनों बेहद खुश थीं। न्यूरॉन फार्मा के कई लोग उनके घर आए थे, और देविका भी वहां मौजूद थी। श्वेता और उसकी माँ नीचे आकर ड्राइंग रूम में सबके साथ बातचीत कर रही थीं। सभी मलाइका मैडम को बेल पर बाहर आने की बधाई दे रहे थे।

"मेम, आपका कंडक्ट तो जेल में अच्छा ही होगा," एक कर्मचारी ने कहा।

"हाँ, तभी तो मैडम एक ही साल में बाहर आ गईं। वरना मर्डर के केस में इतनी जल्दी रिहाई नहीं होती," दूसरे कर्मचारी ने जोड़ा।

श्वेता को यह बातें बिल्कुल पसंद नहीं आईं। वह तेजी से उन दोनों कर्मचारियों के पास पहुंची और उन्हें कसकर एक-एक चांटा मार दिया।

"यू स्टुपिड मोरोन!" श्वेता गुस्से से चीखते हुए बोली, "क्या बकवास कर रहे हो?"

अभी जो गर्मजोशी का माहौल था, वह ग़मगीन हो गया। यह लड़की पागलखाने से भले ही आज़ाद हो गई हो, लेकिन उसकी बदतमीजी का स्तर वहीं का वहीं था। वहां मौजूद कर्मचारी अब जल्द से जल्द वहां से निकलना चाहते थे। तभी पुलिस के सायरन की आवाज़ ने सबका ध्यान आकर्षित किया।

कोई कुछ समझ पाता, उससे पहले ही ASI कमल ड्राइंग रूम में आ चुके थे। "श्वेता, यू आर अंडर अरेस्ट," उन्होंने गंभीर स्वर में कहा।

"क्या, किस जुर्म में?" मलाइका चीखी।

"मैडम, आपकी बेटी एक साइकोलॉजिकल सीरियल किलर है," कमल गुस्से में बोले।

"क्या बकवास कर रहे हो?" मलाइका का गुस्सा और बढ़ गया।

"बकवास नहीं, मैडम। सच है," ASI कमल ने श्वेता के पास आकर उसे हथकड़ी लगाते हुए कहा।

देविका और बाकी कर्मचारी हक्के-बक्के खड़े थे।

"क्या सबूत है तुम्हारे पास?" मलाइका गुस्से और चिंता से भरी हुई बोलीं।

खान चाचा के होश उड़ चुके थे। उन्हें समझ आ गया था कि उनका डर सच हो गया था। श्वेता का भाग्य अब उसका साथ छोड़ चुका था।

"सबूत?" कमल ने खूंखार भाव से कहा। उन्होंने अपना मोबाइल निकाला और एक वीडियो प्ले कर दिया। उसमें पिछली रात प्रद्युम्न की निर्मम हत्या का वीडियो था। वहां मौजूद सभी लोगों की चीखें निकल गईं।

देविका के चेहरे पर एक सुकून था—उसे लगा कि विशाल का कातिल मिल गया।

"मैंने इनको चैलेंज ही इसलिए किया था ताकि इनका कन्फेशन रिकॉर्ड कर सकूं। मैंने उस घर में ऑडियो और वीडियो दोनों लेने वाले CCTV लगवाए थे," कमल ने कहा।

श्वेता के चेहरे पर कोई भाव नहीं थे। उसके लिए यह सिर्फ एक खेल था। मलाइका और खान चाचा के चेहरे का रंग उड़ गया था। श्वेता को अब कोई नहीं बचा सकता था। मलाइका पिछली बार की तरह इस बार इलज़ाम अपने सिर पर नहीं ले सकती थी।

"बस मेरे साथी प्रद्युम्न सर को इस कातिल को पकड़ने की इतनी बड़ी कीमत चुकानी पड़ेगी, यह मुझे नहीं पता था," कमल गुस्से में था और श्वेता को खींचते हुए वहां से ले गया। खान चाचा और मलाइका उसे टकटकी लगाए देखते रह गए। वहां मौजूद कर्मचारियों के बीच बहस शुरू हो गई—क्या श्वेता पूरी तरह पागल थी? क्या वे एक पागल लड़की के साथ काम कर रहे थे? उनकी कंपनी की सीईओ एक पागल लड़की थी?

उस वीडियो को देखने के बाद कोई यह नहीं कह सकता था कि श्वेता किसी भी तरह से सामान्य है।

कुछ ही दिनों में कोर्ट की कार्यवाही में यह स्पष्ट हो गया कि सभी हत्याएं श्वेता ने की थीं। मलाइका ने भी कबूल कर लिया कि आदर्श की हत्या श्वेता ने की थी, और उसे बचाने के लिए मलाइका ने उसका जुर्म अपने सिर पर लिया था।

आज कोर्ट की आखिरी सुनवाई थी, और जज अपना फैसला सुनाने वाले थे। कमल खुश था कि उसने कातिल को पकड़ लिया, लेकिन उसने इसकी भारी कीमत चुकाई थी। तभी उसके चेहरे के भाव बदल गए। इस सच्चाई को उजागर करने के लिए उसने अपने सबसे खास साथी,

इंस्पेक्टर प्रद्युम्नन को खोया था। वह कभी नहीं भूलेगा कि प्रद्युम्न की मौत के लिए वह जिम्मेदार था। अगर वह उस दिन उन्हें शराब नहीं पिलाता, न ही खाना लेने जाता और इतनी देर से आता, तो शायद आज वे जिंदा होते।

तभी कमल का ध्यान प्रद्युम्न की बात पर गया। श्वेता कातिल थी, यह सिर्फ एक छलावा था। खेल कुछ और था। कमल को मन ही मन प्रद्युम्न की पैनी नजर पर गर्व हो रहा था। जो कोई नहीं देख पा रहा था, वह शायद प्रद्युम्न ने देख लिया था।

तभी जज के गेवेल की आवाज़ ने उसका ध्यान खींचा। "सभी सबूतों और गवाहों को देखते हुए, यह कोर्ट इस निर्णय पर पहुंची है कि मलाइका ने आदर्श का खून नहीं किया। इसलिए उन्हें तुरंत प्रभाव से बरी किया जाता है। उन्होंने कानून को गुमराह करने का जुर्म किया, लेकिन उसके लिए वे एक साल की जेल काट चुकी हैं। मलाइका अब पूरी तरह से आज़ाद हैं। यह कोर्ट पहली बार एक बीस वर्षीया लड़की को इतने घिनौने कत्ल करते देख रही है और इसमें कोई भी संदेह नहीं है कि ऐसे कातिल की एक ही सजा है—सज़ा-ए-मौत।"

वहां एक ख़ामोशी छा गई। इतनी सुंदर लड़की को सज़ा-ए-मौत। सभी ने उसके वीडियो देखे थे, लेकिन फिर भी कोई उसे मृत्युदंड नहीं देना चाह रहा था। जज ने आगे कहा, "हालांकि इस कोर्ट को डिफेंस लॉयर की उस दलील को भी ध्यान में रखना होगा कि श्वेता ने ये सारे खून अपने सौतेले पिता के जुल्म के कारण एक साइकोलॉजिकल बीमारी के तहत किए, जो मैगनॉटेन रूल के तहत IPC की धारा 84 में पूरी तरह से कवर्ड है। ऐसे मुजरिम को मृत्युदंड नहीं दिया जा सकता।"

बहुत से लोगों की जान में जान आ गई। श्वेता ने ऐसे घृणित कृत्य किए थे, लेकिन जब सबको पता चला कि आदर्श ने उसके साथ क्या

किया था और वह क्यों ऐसी बन गई थी, तो श्वेता के पक्ष में सहानुभूति बन गई थी। देविका भी अब उससे नफरत नहीं करती थी।

"इसलिए यह कोर्ट श्वेता को इलाज के लिए भाटिया मेंटल असाइलम भेजने का फैसला सुनाती है। जब मेंटल असाइलम से यह प्रमाणपत्र प्राप्त होगा कि श्वेता अब समाज में रहने के लिए पूरी तरह से फिट है, तब उसे रिहा कर दिया जाएगा।"

कोर्ट अपना फैसला सुना चुकी थी। श्वेता को अपने पागलपन के इलाज के लिए अस्पताल भेज दिया गया। कमल भी खुश था। हालाँकि श्वेता ने उसके परम साथी की क्रूर हत्या की थी, लेकिन उसे पता था कि श्वेता ने पागलपन के कारण यह घृणित कार्य किया था।

* ϕ *

श्वेता को सजा हुए लगभग एक साल हो चुका था। वह अब पूरी तरह से ठीक थी, और मानसिक आरोग्य केंद्र से उसे फिटनेस का प्रमाण पत्र मिल गया था। वह अपने घर लौट आई थी, और उसकी माँ के साथ दोनों बेहद खुश थीं। खान चाचा ने उनके स्वागत में कई तरह के स्वादिष्ट पकवान तैयार किए थे।

श्वेता और उसकी माँ उस कमरे में बैठे थे जहाँ आदर्श की हत्या हुई थी। वह एक साउंडप्रूफ कमरा था, जहाँ दोनों आराम से बातें कर सकती थीं।

"मम्मी, यू आर फैबुलस!" श्वेता ने अपनी माँ को जोर से गले लगाते हुए कहा।

"थैंक यू, लेकिन तुम मुझसे कहीं बेहतर हो," उसकी माँ ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया।

"थैंक यू मम्मी, पर जो प्लान आपने बनाया, वह एकदम परफेक्ट था।"

"हाँ, श्वेता। यह प्लान फूलप्रूफ था, पर यह तभी काम करता जब तुम सही एक्टिंग करतीं।"

"हाँ मम्मी, वह तो मुझे करनी ही थी।"

"उस आदर्श में कोई कमी नहीं थी। बस वह तुम्हारे हुस्न के जादू में फँस गया था।"

"हाँ मम्मी। जब पापा—"

"किस पापा की बात कर रही हो? वह जय कपाड़िया मुझे कंपनी से निकालने वाला था।"

"हाँ, उन्होंने आपको अकाउंट बुक फ़ज करते हुए पकड़ लिया था।"

"तो? मैं अपनी ही कंपनी को तो लूट रही थी। इसमें गलत क्या था?"

"हाँ मम्मी, लेकिन आप जीनियस हैं।"

"जिस दिन उस जय कपाड़िया ने मुझे थप्पड़ मारा और कहा कि मैं अब कंपनी से बाहर हूँ, उसी दिन मैंने उसका गेम करने का प्लान बना लिया था।"

"हाँ मम्मी, मैंने देखा था आपने उनकी गाड़ी के ब्रेक फेल कर दिए। मैंने ये बात खान चाचा को बता दी।"

"हाँ, तू भी स्मार्ट है। उस खान को बोल दिया कि तूने आदर्श को देखा।"

"हाँ मम्मी, वह बूढ़ा मान भी गया।"

"प्लान तो था आदर्श और जय दोनों को ही मारने का, पर वह आदर्श उस दिन बच गया। ऐन मौके पर उसने प्लान बदल लिया।"

"हाँ मम्मी, फिर पापा के—"

"यार, कौन पापा? वह जय कपाड़िया। उस जय ने अपने बाद आदर्श को सारे अधिकार दे दिए थे।"

"हाँ, और उन्होंने आपको ज्यादा पैसे नहीं दिए क्योंकि जय ने आपके बारे में आदर्श को बता दिया था।"

"हाँ। उस आदर्श को फिर हमने ऐसा फँसाया कि वह हमारी मुट्ठी में आ गया।"

"बिलकुल मम्मी।"

तभी दरवाजे पर दस्तक हुई। श्वेता ने दरवाजा खोला और सामने खान चाचा खड़े थे।

"वो ASI कमल आपसे मिलने आए हैं," उन्होंने कहा।

"ASI कमल?" माँ-बेटी दोनों एक साथ बोलीं। "ठीक है, उन्हें अंदर भेज दो।"

थोड़ी ही देर में कमल उस साउंडप्रूफ कमरे में माँ-बेटी के साथ बैठा था।

"बोलिए कमल जी, कैसे आना हुआ?"

"बस श्वेता मैडम से मिलना था। सोचा, दर्शन कर लूँ।"

मलाइका हँसते हुए बोली, "ठीक है," और उसने कमल को व्हिस्की का एक पेग बनाकर दिया।

"श्वेता, बहुत अच्छा काम किया। तुम्हारी पागलपन की एक्टिंग इतनी जबरदस्त थी कि कोई समझ नहीं पाया," कमल ने कहा।

श्वेता कुछ कहने वाली थी, लेकिन मलाइका ने इशारे से उसे चुप रहने को कहा।

"कमल सर, आप बताइए, क्या कहना चाहते हैं?"

"मलाइका मैडम, प्रद्युम्न की हत्या श्वेता ने बेहद खूबसूरती से की थी।"

"हाँ, कमल, बोलो, हम सुन रहे हैं," मलाइका ने कहा।

"मरने से ठीक पहले प्रद्युम्न को समझ आ गया था कि असली खेल क्या था।"

"क्या बकवास कर रहे हो?" माँ-बेटी दोनों एक साथ बोल उठीं।

"हाँ, वह मुझे बताने ही वाले थे, पर उन्हें मौका नहीं मिला," कमल ने श्वेता को आँख मारते हुए कहा।

"ये तुम कैसे कह सकते हो कि प्रद्युम्न हमारा खेल समझ गया था?" मलाइका ने पूछा।

"उसने आपके आदर्श के मर्डर का केस हैंडल किया था।"

"हाँ, वह तो है।"

"बस, वह पूरा खेल समझ गया था।"

"क्या था पूरा खेल, हम भी तो सुनें," मलाइका ने कहा।

"ठीक है, मैडम, आपको मेरे मुँह से सुनना है, तो सुनिए," कमल ने सोफे पर बैठते हुए कहा।

"जय कपाड़िया ने आपको चोरी करते हुए पकड़ लिया था। उसने आपके खर्चों पर लगाम लगा दी। आदर्श उसका खास आदमी था। आपने उन दोनों को मारने का प्लान किया, पर जय मारा गया। आदर्श सीईओ बनने वाला था, लेकिन आपने श्वेता को उसके सामने पेश कर दिया।"

कमल ने श्वेता को एक नज़र देखा।

"श्वेता की खूबसूरती पर लट्टू वह आदर्श आपसे शादी करने को तैयार हो गया। उसने आपको सीईओ बनाने के लिए जी-जान लगा दी। पर खूबसूरती की एक समस्या है—एक बार मिल जाए तो उसकी वैल्यू कम हो जाती है।"

मलाइका और श्वेता दोनों कमल की बातों को गौर से सुन रही थीं।

"आपका रवैया कंपनी के प्रति वही पुराना था। आदर्श ने आपको कंपनी से हटा दिया। वह श्वेता का फायदा तो उठाता था, पर कंपनी से गद्दारी नहीं करता था। आपको पता था कि अगर आदर्श को रास्ते से हटाना है, तो कुछ करना होगा।"

"कहानी अच्छी है," मलाइका ने कहा।

"मैडम, कहानी तो आपने अच्छी बनाई थी। मैं तो सच बोल रहा हूँ।"

"एक पागल लड़की को कोर्ट सजा नहीं देगी," श्वेता ने कहा। "इसलिए मम्मी ने मुझे कहा कि मैं आदर्श को तड़पती हुई मौत दूँ। मैंने खान चाचा से किचन नाइफ की ट्रेनिंग ली और आदर्श को एक दर्दनाक मौत दी। लेकिन आदर्श के दो खास लोग थे—करुण शर्मा और रमेश।"

"उन दोनों के रहते तुम कंपनी पर काबू नहीं कर सकती थीं," कमल ने कहा।

"हाँ," मलाइका ने कहा। "इसलिए हमने एक प्लान बनाया। श्वेता की बीमारी के कारण उसके फिंगरप्रिंट नहीं आते थे। मैं जेल चली गई और श्वेता ने उन दोनों को मार डाला।"

"विशाल को क्यों मारा?" कमल ने पूछा।

"क्योंकि पागलपन का विश्वास दिलाने के लिए कुछ अनजाने लोगों को भी मारना था," श्वेता ने कहा।

"हाँ। बस प्रद्युम्न की पैनी नज़र से यह बात बच नहीं पाई," कमल ने कहा।

"और इसीलिए हमारे मास्टरमाइंड ने कहा कि उसे कैसे रास्ते से हटाना है," श्वेता ने कमल को आँख मारते हुए कहा और उसकी गोद में बैठ गई।

कमल जोर से हँसने लगा। "हाँ, श्वेता मैडम, आपके हुस्न का कमाल है।"

कमल अपने ख्यालों में खो गया। उसने प्रद्युम्न की व्हिस्की में दवा मिलाई थी और उसे अकेला छोड़ दिया था। उसने जान-बूझकर मीडिया में अपने चैलेंज की बात फैलाई ताकि प्रद्युम्न की हत्या के बाद लगे कि श्वेता उसे मारने आई थी। प्रद्युम्न जान गया था कि आदर्श की मौत का सच क्या था, इसलिए उसे मारना जरूरी था। जब वह मरा, तो श्वेता ने पहले से ज्यादा पागलपन की एक्टिंग की क्योंकि उसे पता था कि वहाँ सीसीटीवी लगे हैं, जिनमें उसकी ऑडियो और वीडियो दोनों रिकॉर्ड होंगी।

कमल, मलाइका, और श्वेता ने मिलकर न केवल आदर्श को मारा, बल्कि आठ हत्याएं की थीं। वे अब न्यूरॉन फार्मा कंपनी को मनमाने तरीके से लूट सकते थे। जय कपाड़िया ने जिस मेहनत से वह कंपनी बनाई थी, उसकी पत्नी और बेटी अब उतनी ही क्रूरता से उसे लूट रहे थे। शायद मलाइका और श्वेता का यह सच कभी बाहर न आए, लेकिन इस कहानी के असली विलेन वही दोनों थे।

The End

एक रहस्यमयी खेल (सत्य घटनाओं पर आधारित साइकोलॉजिकल क्राइम कहानी)

एक अति सुन्दर लड़की पर ये आरोप है कि वो पुरुषों को अपने रूप के मायाजाल में फसा कर क्रूर क़त्ल कर रही है। क्या वो एक साइको किलर है या सच्चाई कुछ और है।



डॉ. निशा शास्त्री साइंस फिक्शन और थ्रिलर मिस्ट्री के कई उपन्यास लिख चुकी हैं। उन्हें 2024 की Most Influential Author के अवार्ड से दिल्ली वायर (Delhi Wire) ने सम्मानित किया है। उनकी थ्रिलर मिस्ट्री नावेल दी इंटर्न को फिल्मी चर्चा मैगज़ीन ने बॉलीवुड मूवी बनाने के लिए रेकमेंड (recommend) भी किया है। इनका अपना YouTube चैनल भी है जिसमें ये अपने लिखे नोवेल्स की ऑडियो स्टोरी बोलती हैं और इनके इंस्टाग्राम या स्नैपचैट पर आप इनसे नोवेल्स सम्बंधित बात कर सकते हैं।

Rs. 189/-

उपन्यास

ISBN : 978-93-48578-32-7

9 789348 578327

For Sale in the Indian Subcontinent only

राजमंगल प्रकाशन

eBook Available

www.rajmangalpublishers.com

rajmangalpublishers r_publishers